तृतीय अध्याय

"सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों का तात्विक विवेचन।"

तृतीय अध्याय
'सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों का तात्विक विवेचन''

3.1 प्रस्तावना -

संस्कृत उक्ति है, ''काव्येषु नाटक रम्य''[१] अर्थात काव्य साहित्य की सभी विधाओं में नाटक विधा सबसे अधिक रमणीय और आकर्षक है। आचार्य भरतमुनि के अनुसार - ''न तज्ज्ञानं न तच्छिल्प न सा विद्या न सा कला नऽ सी योगे न तत्कर्ष नाटयऽ स्मिन्यत्र्य दृष्यते। ''[२]

अर्थात ऐसा कोई भी ज्ञान, कोई भी शिल्प, कोई विद्या, कोई कला, कोई योग, कोई कर्म नही है जो नाटक में दिखाई न देता हो।

नाटक की शिल्पविधि के सम्बन्ध मे डॉ शान्ति मलिक कहते है - ''रचना की दृष्टि से नाटक के मुलभूत तत्व है - कथानक, पात्र - चित्रण, संवाद, भाषाशैली, देशकाल और वातावरण और रंगशिल्प।''[३]

इस संदर्भ में डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल अपने ग्रंथ 'रंगमंच और नाटक' भूमिका में लिखते हैं, - ''क्या हमने गंभीरता से कभी सोचा है, कि हमारा युग क्या है? इसका व्यक्तित्व कैसा है? और क्या इस युग की प्रगति और इसकी अंतरात्मा इसका सारा सुख - दु:ख, स्वप्न और आशा, पीडा और त्रास आज हमारे नाटय कृतियों और उनके अनुष्ठानों में प्रतिबिंबित है।''[४]

उपर्युक्त कथनों का तथ्य सेठ जी के विवेच्य नाटकों में दिखायी देता है। उनके नाटक 'हर्ष', 'शशिगुप्त' और 'शेरशाह' अपनी विषय महत्ता और शिल्पगत चमत्कृतियों के कारण बहुचर्चित रहें। इस कृति का समीक्षात्मक तात्विक अध्ययन इस अध्याय में निम्नप्रकार प्रस्तुत है -

१. कथावस्तु
२. पात्र या चरित्र-चित्रण
३. कथोपकथन या संवाद
४. भाषाशैली
५. देशकाल वातावरण
६. उद्देश
७. शीर्षक की सार्थकता

3.2 कथावस्तु -

भारतीय साहित्य में नाटय परंपरा बहुत ही प्राचीन है। कथावस्तु नाटक का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। कथानक मानव जीवन का प्रतिबिंब है। मानव के शरीर में जो स्थान अस्थियों का होता है, वही स्थान नाटक में कथावस्तु का होता है। नाटक की मूल कथा एवं मूल कथा से संबंध रखनेवाली समस्त घटनाओं को कथावस्तु कहते है।''[५] कथानक नाटक का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है क्योंकि जिस प्रकार आधार के बिना एक स्तंभ भी खडा नही किया जा सकता है, उसी प्रकार नाटक की रचना के लिए भी थोडा या अधिक कथा का आधार नितांत आवश्यक है। अरस्तू ने तो कथावस्तु को नाटक की आत्मा कहा है। कथावस्तु का सम्बन्ध केवल कथा से न होकर नाटक की सम्पूर्ण घटनाओं और उसके सम्पूर्ण समूह से होता है।

प्रत्येक नाटक की कथावस्तु का स्त्रोत सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक परिस्थिति में प्राप्त होता है। नाटकों में कथावस्तु विविध रूपों में प्रस्तुत होती है। साहित्यसृष्टा सदैव महती, अन्तर्दृष्टि, प्रभावात्मकता एवं व्यापक संवेदनशीलता की वरण्य कसौटी पर कसकर ही विषय को चुनता है। ज्यों घटना जीवन के मर्म को घोषित कर उसमें प्राण ज्योति और गति का संचार करने में सक्षम हो सके। वही कृति का रूप धारण कर सकती है। कथानक का चयन एवं उसका व्यवस्थित कलापूर्ण प्रस्तुतीकरण ही नाटककार की महानता के मानदण्ड है।

सेठ गोविन्ददास के आलोच्य नाटक हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह ऐतिहासिक नाटक है। इन नाटकों की कथावस्तुएँ इतिहास की घटनाओं पर आधारित हैं और नाटककार ने कल्पना के मिश्रण से उसे रूचकर बनाया है।

'हर्ष' का कथानक 'वर्धन साम्राज्य' से लिया गया है। नाटक का आरंभ राजवर्ध्दन के वध से होता है। हर्ष बौध्द धर्म के प्रभाव से प्रभावित रहने के कारण राज्य ग्रहण नही करना चाहते थे। स्थाण्वीश्वर की राज्यनौका राजा से रहित होने के कारण डगमगा रही थी। तब माधवगुप्त ने हर्ष को समझाकर राज्य-ग्रहण करने के लिए कहा। तब हर्ष राजा उसे स्वीकृती दे देता है।

सेठ गोविन्ददास का 'हर्ष' नाटक 1934 में प्रकाशित हुआ। 'हर्ष' नाटक में ब्राम्हण और बौध्द धर्म के विरोध को चित्रित किया है। धार्मिक असहिष्णुता को विसंगतियों की ओर भी सेठ जी ने संकेत किया है। प्रकाशित शुध्द ऐतिहासिक नाटकों में 'हर्ष का स्थान पहला है। 'हर्ष' नाटक की कथावस्तु बडे भाई राजवर्ध्दन के मारे जाने पर हर्ष विवश हो उठता है। अपना परम कर्तव्य समझकर राजगद्दी स्वीकार कर लेता है। हर्ष सबसे प्रथम भाई को छल से मारने वाले गौडाधिपती शशांक पर चढाई करने के लिए अपने सेनापति को भेजता है और स्वयं अपनी बहन राज्यश्री को खोजने निकलता है।

हर्ष राजा को इन दोनों कार्यों में सफलता मिलती है। शशांक अधीनता स्वीकार कर लेता है और राज्यश्री मिल जाती है। हर्ष राज्यश्री को कान्यकुब्ज की गद्दी पर बिठाकर स्वयं उसका माण्डलिक बनता है और इस प्रकार समग्र उत्तरापथ में बालसखा माधवगुप्त की सहायता से एक विशाल साम्राज्य की स्थापना कर लेता है। किन्तु विभिन्न आपसी षडयन्त्रों के कारण यह साम्राज्य सम्पूर्ण भारतभर में व्याप्त नहीं हो पाता। दक्षिण सम्राट पुलकेशिन से हर्ष पराजित हो जाता है और शशांक भी स्वाधीन हो जाता है। कथा की समाप्ति हर्ष के समग्र सम्पत्ति के दान और षडयन्त्रकारियों के हर्ष को मारने के षडयन्त्र की असफलता पर होती है।

निष्कर्षत: इस नाटक में आदर्श राज्य और शासन प्रणाली, नवीन संगठन, सार्वजनिक हित और देशी-विदेशी राजाओं से परस्पर मैत्री के सिध्दांन्तो का सफल प्रतिपादन हुआ है। 'हर्ष' नाटक में सम्राट हर्ष के जीवन की सारी घटनाएँ ऐतिहासिक हैं।

प्रस्तुत नाटक ऐतिहासिक कथावस्तु पर आधारित नाटयकृति है। सेठ जी ने इतिहास की विषयवस्तु पर नाटक लिखने के बजाय इतिहास को अपनी कल्पना का केन्द्रबिन्दू माना है। प्रो. प्रकाशचन्द्र गुप्त इस नाटक के विषय में लिखते हैं, ''इस नाटक में हर्ष का चरित्र भी एक विशेष दृष्टिकोण से देखा गया है। गोविन्ददास जी के अनुसार हर्ष भारत में शान्तिपूर्ण साधनों से केन्द्रीय राज्यसत्ता का निर्माण करने में लगे थे। इस चित्रपट पर राज्यश्री, यानचांग, शशांक आदि इतिहास के अनेक सुपरिचित पात्र हैं। ऐतिहासिक वातावरण बनाने में सेठ जी विशेष सफल हुए है।'' इस तरह सेठ जी ने अपनी कल्पना चित्रित करने के लिए इतिहास का आधार लिया है।

कथावस्तु के आधार पर नाटक की कथावस्तु मिश्र कथावस्तु मानी जाती है। इसमें हमें इतिहास और कल्पना दोनों प्रकार की कथाएँ दिखायी देती हैं। नाटक में चित्रित सभी पात्र ऐतिहासिक दिखायी देते हैं। नाटक की कथावस्तु संक्षिप्त है तथा उसमें मौलिकता एवं रोचकता भी है। इस नाटक की कथावस्तु योजना सुगठित है और कार्य-शृंखला किसी स्थान पर विश्रृंखलित नहीं है।

नाटयशास्त्र के अनुसार नाटक में मुख्य कथा से संबंध रखनेवाली कुछ सहायक कथाएँ भी है। इसमें राजकुमार शिलादित्य के, मित्रों की प्रेरणा एवं कर्तव्य की पुकार से राज्यग्रहण करने, विन्ध्यपर्वत प्रदेश के चित्तारोहन को तैयार राज्यश्री को लौटाने, राज्यश्री को सम्राज्ञी बनाकर स्वयं बहन के रक्षक रूप में कार्य करने, सारे आर्यवर्त्त को एक साम्राज्य में परिणित करने, आर्य और बौध्द धर्म के एकीकरण के लिए शिव, आदित्य एवं बुध्द के संयुक्त पूजन का श्रीगणेश करने, तथा सर्वस्व सम्पत्ति दान देने आदि की घटनाएँ वर्णित है। जो नाटक के साथ पताका और प्रकरी रूप में संबंध रखती है। साथ ही नाटयशास्त्र के अनुसार प्रस्तुत नाटक के कथानक में पाँच अर्थप्रकृतियाँ, पाँच कार्यावस्थाएँ और पाँच संधियाँ इनका समायोजन ठीक ढंग से हुआ है।

विवेच्य नाटक में सेठ जी ने रस-योजना की पूर्ति की है। प्रधान रस वीर है। साथ ही शृंगार, रौद्र आदि रसों का भी प्रयोग सफलता के साथ हुआ है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि नाटक की कथावस्तु में वस्तु के आधार, प्रकार तथा रूप पूर्ण रूप में दिखायी देते हैं। घटनाओं का सुंदर समायोजन किया है और उसके कारण कथावस्तु रोचक बन पडी है। रस एवं संघर्ष की योजना भी प्रस्तुत कथावस्तु में ठीक स्थान तथा समय पर होने के कारण उसमें प्रभावोत्पादकता एवं भावुकता भी तैयार हुई है। इन सभी के कारण 'हर्ष' एक सफल कृति बन चुकी है।

सेठ गोविन्ददास का दूसरा ऐतिहासिक नाटक 'शशिगुप्त' १९४२ में लिखा गया है। 'शशिगुप्त' नाटक की कथावस्तु नवीन ऐतिहासिक खोजों के आधार पर विनिर्मित है। 'शशिगुप्त नाटक इतिहास प्रसिध्द मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त की ऐतिहासिक कथा को लेकर लिखा गया है।

'शशिगुप्त' नाटक का आरंभ मनोरम एवं रमणीय वातावरण में होता है। नाटककार ने एक लम्बे रंगसंकेत में एक विशाल एवं प्रभावपूर्ण प्राकृतिक दृश्य का सजीव चित्र अंकित किया है। यही 'मोर पर्वत शिखर पर' चाणक्य और शशिगुप्त विचारविमर्श करते हुए नजर आते हैं। इस नाटक में तत्कालीन राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति का यथार्थ उद्घाटन किया है। इसके अतिरिक्त इन रचनाओं में तत्कालीन व्यवस्थाओं एवं परिपाटियों का भी चित्रण किया हैं जैसे - उस समय के रीतिरिवाजों , शासनप्रणालियों, नवीन संगठनो, राजदरबारों की व्यवस्थाओं, सभासद एवं अन्य व्यक्तियों के आचरणों व शिष्टाचार तथा धार्मिक विश्वासों एवं विभिन्न उत्सवों का ज्ञान भली प्रकार से हो जाता है। सेठ जी ने एकतन्त्र और प्रजातन्त्र शासन की व्याख्या कर चक्रवर्ती सम्राट का यथार्थ चित्रण किया है। शशिगुप्त इस नाटक का प्रमुख पात्र है। वह एक वीर योद्धा, आज्ञाकारी शिष्य और निस्वार्थी देशसेवक है। चाणक्य शशिगुप्त नाटक का नायक है और शशिगुप्त उसकी लक्ष्य सिध्दी का प्रधान सहायक है। शशिगुप्त चाणक्य को अपना गुरू मानता है और उसकी मदद से राज्यकारभार चलाता है। सेनापति सिल्यूकस की सुपूत्री हेलन चन्द्रगुप्त से विवाह करके भारत सम्राज्ञी बनना चाहती है। शशिगुप्त इस नाटक में इस विवाह की योजना भारत की शक्तिमत्ता, अखण्डता और संभावित भावी आक्रमणों से मुक्ति के उद्देश से ही की गयी है। साथ ही नाटककार ने उस समय के राजपरिवारों के सभी सदस्यों की वेशभूषा, गले, हाथ के गहने तथा सिर पर पहने जाने वाले रत्नजटित सुवर्ण के आभूषणों तथा वास्तुकला का जो विस्तृत वर्णन किया है उनसे प्राचीन ऐतिहासिक वातावरण निर्मित होने में सहायता मिली है।

प्रमुख रूप से 'शशिगुप्त' नाटक में यूनान सम्राट सिकन्दर के भारत पर आक्रमण, अश्वकों के सरदार शशिगुप्त व्दारा उसका प्रतिरोध, आम्भीक का देशद्रोह, चाणक्य के निर्देश पर कूटनीति के रूप में शशिगुप्त व्दारा अलक्षेंद्र के क्षत्रप बनने, पंचनद नरेश पर्वतक पर सिकन्दर के आक्रमण, पराजय और मैत्री, पर्वतक के सहयोग से सिकन्दर व्दारा मगध पर आक्रमण की योजना बनाने, चाणक्य की कूटनीति और प्रयत्नों से इस योजना के विफ ल होने और मगध पर आक्रमण किये बिना ही सिकन्दर के सिंध और मकरान के मार्ग से

लौट जाने, शशिगुप्त व्दारा विद्रोह कर यूनानी सैनिकों को खदेडने, मार्ग में ही सिकन्दर के मरने, नन्द की विलासिता, चाणक्य की दूरदर्शिता और कूटनीति से नन्द और पर्वतेश्वर की मृत्यु, शशिगुप्त के भारत सम्राट बनने और चन्द्रगुप्त नाम धारण करने, भारत पर सिल्यूकस के आक्रमण, चन्द्रगुप्त से पराजय और हेलन से चन्द्रगुप्त के विवाह का आदि प्रसंगों का चित्रण है।

संक्षिप्त में इस नाटक का प्रमुख लक्ष्य समग्र भारत को एकता के सूत्र में पिरोना, जन्मभूमि के परतंत्र भागों को स्वतंत्र करना, देश में एक साम्राज्य की स्थापना करना और उसे इतना शक्तिशाली बनाना है कि संसार का कोई भी देश उस पर आक्रमण न कर सके, उसके सामने मस्तक न उठा सके और अंतत: वह अपने इस लक्ष्य में सफल होता है।

इस तरह 'शशिगुप्त' नाटक टेकनीक की दृष्टि से भी पूर्ण सफल रचना है। इसमें पाँच अंक है और प्रत्येक अंक में पाँच - पाँच दृश्य। कथा सुगठित है और भाषा सजीव है। गीतों की रचना सुन्दर है और वे परिस्थिति के अनुसार विशेष रूप से लिखकर जडे गये हैं। उनसे पात्रों के गुप्त मनोभावों तथा वातावरण की सृष्टि होती है और दर्शकों पर नाटककार की इच्छानुसार प्रभाव पडता है।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि कथावस्तु की सभी अवस्थाएँ प्रस्तुत नाटक में पूर्ण रूप से यहाँ नहीं मिलती। परंतु इतका पूर्ण अभाव भी नहीं मिलता है। स्थान - स्थान पर इन समस्याओं का सुंदर समायोजन दिखायी देता है।

कथावस्तु में मौलिकता एवं संक्षिप्तता के साथ ही रोचकता का गुण भी है। इसमें पात्र संख्या सीमित है। वस्तु के प्रकार के अनुसार नाटक में मुख्य कथा के साथ कुछ अवान्तर घटनाओं का संयोजन किया है। मुख्य कथा के साथ कुछ सहायक कथाएँ भी चलती हैं। जिन्हें पताका और प्रकरी कहा गया है। कथावस्तु का प्रारंभ और अंत सुखान्त है।

नाटककार सेठ जी ने प्रस्तुत नाटक में रस योजना की पूर्ति की है। इसमें प्रमुख वीर और शृंगार रस है। इन दोनों रसों का सफल परिपाक हुआ है। साथ ही इस नाटक में कही-कही हास्य, बीभत्स, विस्मय, शोक, भय आदि भावों की उद्‌बुध्दि से भावों का भी इस

नाटक में सुन्दर विधान है। अपनी इस सुंदर रस योजना के कारण नाटकीय कथावस्तु बडी मार्मिक एवं सहज संवेदनीय बन सकी है और उसमें संप्रेषणीयता की अभिवृद्धि हुई है।

इस तरह नाटक के कथानक का आदि, मध्य और अंत स्पष्ट और प्रभावशाली है। रस एवं संघर्ष की स्थितियाँ भी प्रस्तुत कथानक में ठीक स्थान और समय पर होने के कारण यह एक सफल कृति है।

'शेरशाह' सेठ जी का तीसरा ऐतिहासिक नाटक है जिसकी रचना 1945 में हुई है। विवेच्य नाटक की कथावस्तु मध्यकालीन भारतीय इतिहास से सम्बन्धित है। नाटक का आरम्भ और परिसमाप्ति बडे प्रभावशाली ढंग से होती है।

'शेरशाह' नाटक में पाँच अंक है। साथ ही प्रत्येक अंक में कई दृश्य है। स्थान में दिल्ली से बंगाल तक प्रदेश है और नाटक की घटनाओं का समय 30 वर्षो का 1511 से 1541 ई. तक है।

शेरशाह मुस्लिम युग से सम्बन्धित सेठ गोविन्ददास जी का प्रथम नाटक है। इस नाटक में नाटककार ने भारत के इतिहास का वह पृष्ठ खोला है, जब एक साधारण नवयुवक ने दृढप्रतिज्ञ साधना का व्रत लेकर भारत का नक्शा ही बदल दिया था। जहाँ पृथ्वीराज चौहान और राणा साँगा विदेशियों को नहीं रोक सके, वहाँ सम्राट चन्द्रगुप्त की तरह शेरशाह ने उनके पैर उखाड दिये थे और फिर से स्वदेशी साम्राज्य की नींव रखी, साथ ही साथ शायद भारतीय इतिहास में पहली बार साम्प्रदायिकता की उलझनों से उपर उठकर शेरशाह ने भारतीयता का आदर्श स्थापित किया।

नाटक की कथावस्तु इतिहास से ली गयी है पर इसमें नवीनता है। साथ - ही - साथ इसमें दो अलग कहानियाँ चलती हैं। मुख्य कहानी शेरशाह तथा उसके कार्यों से सम्बन्धित है। दूसरी कहानी शेरशाह के छोटे भाई निजाम की है। युवती लाडबानू का चुनार के सूबेदार ताजखाँ से विवाह हो जाता है, पर निजाम उसे गुप्त रूप से चित्र बनाते समय से ही प्यार करने लगा था। परिस्थितिवश धन पाने और राज्य के काम में लगाने के लिए शेरशाह चुनार के सूबेदार ताजखाँ का कत्ल करता है और उसकी दौलतमंद मलिका लाडबानू से विवाह करता है। देवर होते हुए भी वह निजाम से ही प्रेम करती है।

शेरशाह राजनीति के नाना जटिल कार्यों में व्यस्त रहता है। वह स्वयं हिन्दू मुसलमानों का एक मानने वाला स्वयं अपने को भारतीय मुसलमान मानता है। मुसलमान होते हुए भी मुगलों के आक्रमण से भारत को बचाना चाहता है। उधर बाबर का आक्रमण होता है, पर वह उसकी और नहीं मिलता। वह यह सोचता रहता है कि किस प्रकार इन विदेशी मुगलों का मूलोच्छेदन करे। परिस्थितियाँ बदलती हैं। हुमायूँ के समय शेरशाह हुमायूँ को निकालकर स्वयं भारत का सम्राट होता है। उसका प्रधान मित्र है एक हिन्दू ब्रह्मादित्य गौड। शेरशाह को राजनीतिक सफलता मिलती है पर उसका चरित्र ही कुछ ऐसा है कि उसमें व्यक्तिगत चीजों के सम्बन्ध में बहुत कम स्थान है। लाडबानू से विवाह का कारण धन है, न कि प्रेम। यह धन देश के काम आयेगा। लाड को प्रेम नहीं मिलता। वह जीवनपर्यन्त अतृप्त रहती है और निजाम के प्रति उसका वासनात्मक आकर्षण बढता जाता है। जिसका अन्त पागलपन है। निजाम और लाडबानू की गुप्त प्रेम - कथा तथा उसके मनोवैज्ञानिक चित्रण से इस नाटक में सरसता आ गयी है। शेरशाह की वीरता और निजाम की प्रेमकथाओं के एक अजीब तरह गुंथ जाने से इस नाटक में एक विशिष्ट प्रकार की कलात्मकता आ गयी है।

इस तरह 'शेरशाह' नाटक मे इतिहास की उथल-पुथल, युध्द, आक्रमण आदि अनेक ऐतिहासिक घटनाओं का संमिश्रण है, पर यह इतिहास नहीं नाटक है।

निष्कर्षत: इस नाटक का मुख्य उद्देश है राष्ट्रवाद की प्रतिष्ठा करना, हिन्दू - मुस्लिम में एकता स्थापित करने का प्रयास,धर्मनिरपेक्ष और सम्मिलित राज्य स्थापित करने की प्रखर योजना दिखायी देती है। साथ ही साम्प्रदायिकता को मिटाकर भारतीयता का आदर्श स्थापित करना।

इस प्रकार प्रस्तुत नाटक ऐतिहासिक कथावस्तु पर आधारित नाटयकृति है। सेठ जी ने इतिहास की विषयवस्तु पर नाटक लिखने के बजाय इतिहास को अपनी कल्पना का केन्द्रबिन्दू माना है। प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु में मौलिकता एवं रोचकता दिखायी देती है इसमें आई अवांतर घटनाएँ मुख्य कथा के साथ सुसंबंद्ध है तथा कथानक का आदि, मध्य और अंत स्पष्ट और प्रभावशाली है। इसमें पात्रों की संख्या सीमित है। इसमें प्रमुख रूप से वीर, शृंगार रस का प्रयोग किया है। साथ ही जुगुप्सा, बीभत्स, रौद्र आदि रसों का भी

प्रयोग किया है। इस तरह विवेच्य नाटक में रस एवं संघर्ष की स्थितियाँ ठीक स्थान और समय पर होने की वजह से सेठ गोविन्ददास जी की 'शेरशाह' यह एक सफल कृति मानी जाती है।

3.3 पात्र एवं चरित्रचित्रण -

कथावस्तु के बाद नाटक में पात्र एवं चरित्रचित्रण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है। याने साहित्य समाज से अछूता नही रह सकता। समाज अनेक व्यक्तियों का मिला-जुला संघटन होता है। इसलिए साहित्यकार अपना साहित्य विभिन्न व्यक्तिचित्रों से रेखांकित करता है। नाटककार नाटक के कथ्य के अनुसार पात्रों का चरित्रचित्रण प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से करता है। मानव चरित्र के भिन्नत्व में अभिनत्व दिखाना नाटककार का कर्तव्य है। इस दृष्टि से यदि नाटक का विषय मनुष्य है, तो चरित्रचित्रण नाटक का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। नाटकों में पात्रों का होना उतना ही आवश्यक है, जितना शरीर के अंतर्गत प्राण। बिना चरित्र के मनुष्य के भाष्य का विधान स्पष्ट नहीं किया जा सकता। चरित्रचित्रण के माध्यम से नाटककार अपना जीवनदर्शन प्रस्तुत करता है और पात्रों में प्राण डालकर उन्हें जीवन के उत्कर्ष, अपकर्ष, घात- प्रतिघात आदि सहने के हेतु संसार में छोड देता है। उनके मानसिक आवेगों, विचारों तथा प्रवृत्तियों आदि का मौलिक विश्लेषण चरित्र - चित्रण के माध्यम से ही किया जा सकता है। नाटककार पात्रों के माध्यम से ही अपने मंतव्य को दर्शक या पाठकों तक पहुँचाता है। नाटक का कथानक जीवित पात्रों की क्रियाशीलता द्वारा ही प्रस्फुटित होता है। नाटक की सफलता के लिए नाटकीय स्थितियों की योजना के साथ-साथ चरित्रचित्रण की प्रभावात्मकता भी आवश्यक है। नाटक में जीवन के सभी गतिविधियों का परिचय पात्रों के माध्यम से मिलता है।

चरित्रचित्रण का अभिप्राय यह है कि नाटकों में पात्रों को पर्याप्त मूर्तिमंत और स्वाभाविकता के साथ - साथ इस प्रकार चित्रित करना है कि वे पाठकों के लिए छायामात्र न रहकर कम से कम उस समय के लिए तो व्यक्तित्व धारण कर ले।

सेठ जी के विवेच्य नाटकों के अधिकांश पात्र इतिहास प्रसिध्द एवं राजकुल से सम्बन्धित हैं। सेठ जी ने अधिकांश पात्रों के चरित्रविकास, चरित्रचित्रण एवं उनकी

व्यक्तित्व प्रतिष्ठा में अत्याधिक शिल्पकौशल का परिचय दिया है। पात्रों के चरित्र का विकास बाहय और अर्न्तव्दंव्द के बीच बडे कलात्मक ढंग से चलता है। नाटककार ने चरित्र-चित्रण में सहज उन सभी साधनों - पात्रों के कार्यकलाप, संवाद, अन्य पात्रों के कथन, स्वगत आदि का सफल प्रयोग किया है।

'हर्ष' नाटक में नायक के अतिरिक्त सहकारी नायक एवं प्रतिव्दंव्दी पात्रों का विधान किया गया है। भारतीय नाटयशास्त्र के अनुसार इन नाटकों के मुख्य चरित्र हर्ष, माधवगुप्त धीरोदात्त कोटि के नायक है। माधवगुप्त हर्ष का सहकारी है जो नायक के समान उदात्त गुणों से युक्त आदर्श चरित्र है। शशांक नरेन्द्रगुप्त, आदित्यसेन आदि प्रतिव्दंव्दी पात्र राजनीतिक क्षेत्र के है, इनके चरित्रों में गुण एवं दोषों का सुन्दर संमिश्रण हुआ है। इसमें चीनी यात्री यानचाँग का भी महत्वपूर्ण योगदान हैं।

चरित्रचित्रण में नाटककार को पर्याप्त सफलता मिली है। अधिकांश चरित्र यथा - 'हर्ष' के हर्ष, माधवगुप्त, आदित्यसेन तथा राज्यश्री सप्राण एवं आकर्षक बन पडे हैं। हर्ष राजा दृढ संकल्पी और दूरदर्शी है। वह प्रारम्भ में ही दो निश्चय करता है। एक तो वह आजन्म विवाह न करेगा, दूसरे व्यर्थ का रक्तपात न करेगा। दूसरी बात उचित है, लेकिन वह विवाह क्यों नहीं करना चाहता ? इससे उसकी निस्वार्थता और निर्लेप वृत्ति स्पष्ट रूप से दिखायी देती है। हर्ष एक वीर, विवेकी, सच्चारित्र, आदर्श मित्र एवं उदार राजा है। उसके चरित्र की मुलभूत विशेषताएँ त्याग और कर्तव्य की भावना तथा निर्लेप वृत्ति है। माधवगुप्त का चरित्र हर्ष के एक निष्कपट सहयोगी विचारशील मनस्वी तथा कर्मठ योध्दा के रूप में बडी विशदता एवं उज्ज्वलता से अंकित किया है। राज्यश्री का चरित्र एक बुध्दिमती, विदुषी एवं सहृदय नारी के रूप में प्रस्तुत किया है। यद्यपि नाटककार ने इनके चरित्रांकन में चरित्रपध्दति के सभी साधनों - स्वगत कथन, पात्र के कार्य एवं अन्य पात्र कथन आदि-का उपयोग सफलतापूर्वक किया है। इन पात्रों की सामान्य विशेषता देशभक्ति की बलवती भावना है।

सेठ जी का दूसरा ऐतिहासिक नाटक 'शशिगुप्त' के अधिकांश चरित्र भी इतिहास प्रसिध्द एवं राजकुल से सम्बन्धित ही है। इस नाटक के चरित्रचित्रण में नाटककार को

पर्याप्त सफलता मिली है। भारतीय नाटयशास्त्र के अनुसार इस नाटक का नायक 'शशिगुप्त' धीरोदात्त कोटि का नायक है। वही नाटक का प्रमुख पात्र है। भारतीय नाटय-साहित्य के अनुसार धीरोदात्त नायक के अनुसार सभी सद्‌गुण उसमें पाये जाते हैं। शशिगुप्त के चरित्र में उसकी महान वीरता, आदर्शवादिता और अत: करण की शुध्दता सबसे प्रधान है। शशिगुप्त में निस्वार्थ वृत्ती, साहसिकता, आदर्शवादिता, देशभक्ति और पूत चरित्रता कूट - कूटकर भरी हुई है। चाणक्य के ये शब्द 'शशिगुप्त' के चरित्र को स्पष्ट करते है - "वत्स, इस समय आर्यावर्त में तुम से अधिक वीर, तुम से अधिक आदर्शवादी, तुम से अधिक देशभक्त, तुम से अधिक शुध्द अन्त:करण और आचरणवाला और कोई व्यक्ति नहीं। तुम्ही यूनानियों को इस देश से निकाल इस देश में एक साम्राज्य की स्थापना कर सकते हो, उसके चक्रवर्ती सम्राट हो सकते हो। तुम्हारी जीत इस देश को संसार का पुन: सर्वश्रेष्ठ देश बना सकती है और तुम्हारी हार इसे शताब्दियों के लिए दास...."[6]

'शशिगुप्त' नाटक का दूसरा महत्त्वपूर्ण पात्र है चाणक्य, जो शशिगुप्त का गुरू है। उसमें न केवल शासन-प्रबन्ध की प्रतिभा है, वरन् वह कार्य-कुशल, बुध्दिमान और परिस्थिति के अनुसार बदलनेवाला कूट राजनीतिक है।

है। मौर्य साम्राज्य को शक्तिशाली और सुसंगठित बनाने में उसका प्रमुख हाथ है। चाणक्य में विव्दत्ता, प्रतिभा, बुध्दि के साथ निस्वार्थता भी पर्याप्त है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से चाणक्य का चरित्र गहरा है। वह देशप्रेमी है और अपने शिष्य शशिगुप्त का सदा हितचिन्तक है। सिकन्दर एक कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में तथा पोरस एक वीर किन्तु घमण्डी, दूरदर्शी एवं विलासी राजा के रूप में चित्रित किया है। गोविन्ददास जी के शशिगुप्त नाटक की हेलन भी अपना निजी व्यक्तित्व रखती है। उसके चरित्र में भी पर्याप्त मनोवैज्ञानिक गहनता है और सर्वत्र नाटककार ने उसे स्वतंत्रता ते सोचने - विचरने का अवसर दिया। हेलन एक अल्हड, परन्तु एक देशभक्त शुध्द अन्तकरण वाली नवयुवती है, साथ ही वह विश्वप्रेमी भी है। नन्द एक विलासप्रिय और हमेशा नर्तकियों में रममाण रहनेवाला मगध का राजा है। आम्भीक तक्षशिला का राजा, एक देशद्रोही सिकन्दर से मिला हुआ राजा है। नाटक के अन्य पात्रों में राक्षस, शकटार, वीरभद्र, सिल्यूक स और पिथान का

उल्लेख है। राक्षस नन्द का मंत्री रहता है और देशभक्ती से जादा वह स्वामिभक्ति को महत्त्वपूर्ण मानता है। इसी कारण वह सिकन्दर से स्वयं युध्द करता है। शकटार को मगध का निर्वाचक, राज-कर्मचारी के रूप में चित्रित किया है। उसके साथ सात निर्दोष बेटों को नन्द राजा मार देता है। इसी का बदला लेने के वजह शकट्रार धनुष्यबाण से एक साथ सात तीर नन्द के हृदय में छेद देता है। वीरभद्र को एक सच्चा सेवक, देशभक्त, एक साधू, गायक के रूप में चित्रित किया है। उसकी गान से युध्द करते वक्त प्रोत्साहन मिल जाता है। उसके गान में जीत का मंत्र है। सिल्यूकस सिकन्दर का सेनापति, बाद में बैबीलोन का सम्राट है। हेलन के पिता सच्चे स्वामी सेवक है। लेकिन शशिगुप्त से आखरी दम तक सिकन्दर का वचन पूर्ण करने के लिए शशिगुप्त से युध्द करता है। लेकिन उसमें असफ लता रहता है। इस प्रकार सेठ जी शशिगुप्त नाटक में चरित्र-चित्रण करने में सफल होता है।

सेठ जी का तिसरा ऐतिहासिक नाटक 'शेरशाह' 1842 में प्रकाशित मुस्लिम युग से सम्बन्धित और साम्प्रदायिकता के उलझनों पर लिखा हुआ नाटक है। इस नाटक का प्रमुख पात्र शेरशाह है., जो धीरोदात्त कोटि का नायक है। इस नाटक की सम्पूर्ण कथावस्तु शेरशाह के ईर्दगिर्द ही घूमती है। शेरशाह का चरित्र देशभक्ति और साम्प्रदायिकता से विहीन देशभक्ति से परिपूर्ण है। वह एक सच्चा राष्ट्रवादी है। शेरशाह का राष्ट्रवादी आदर्श हमारे सामने आकाशदीप की तरह चमक रहा है, जिसने मुसलमान होते हुए भी मुगलों को विदेशी माना और उसका डटकर मुकाबला किया। शेरशाह आदर्श राजा, प्रजा का हितचिंतक, दृढनिश्चयी, कृषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाला और असाधारण युवक, नये साम्राज्य का निर्माता, व्यक्तिगत प्रेम को तिलांजलि देनेवाला, हिन्दू-मुस्लिम धर्मो में ऐक्य निर्माण करनेवाला और भारतीय मुसलमानों का पथ-प्रदर्शन करनेवाला आदि विविध रूपों में उनका व्यक्तित्व हमारे सामने नजर आता है। साथ ही शेरशाह का छोटा भाई निजाम का व्यक्तित्व भी महत्त्वपूर्ण है। वह एक कवि हृदयवाला, सच्चा प्रेमी, भाई के प्रति आदर रखनेवाला, दुर्बल, प्रेम को गुनाह समझनेवाला के रूप में इस नाटक में चित्रण हुआ है। शेरशाह का मित्र ब्रह्मादित्य गौड, फरीद का हिन्दू होते हुए भी शेरशाह का परमभक्त, गरीब, प्रेरणादायी, महत्त्वकांक्षी और मानव चरित्र के श्वेतपथ के रूप में चित्रित हुआ है। साथ ही इस नाटक

की नायिका लाडबानू है, जो शेरशाह की पत्नी है। लाड निजाम की प्रेम प्रतिमा है। लाडबानू सौंदर्यवती अमीर, असंतुष्ट, यौन - क्षुधा से पीडित नवयुवती है। जिस निजाम को वह प्रेम करती रही वह उसे जीवनभर मिला भी नहीं। नसीम भी एक महत्त्वपूर्ण है। वह लाडबानू की पालतू मैना है, जिसके सामने वह स्वगत-कथनों में हृदय के उद्‌गार खोलती हैं। इस पक्ष के माध्यम से युवती की दलित भावनाओं का स्पष्टीकरण कर गोविन्ददास जी ने नाटकीय टेकनीक का नया प्रयोग किया है। साथ ही इस नाटक का गौण पात्र प्रतिस्पर्धी हुमायूँ मुगल सम्राट का चित्रण हुआ है। वह एक कमकुवत योद्‌धा विलासप्रिय, दूसरों पर निर्भय रहनेवाला आदि रूपों में इसका चित्रण हुआ है। दूसरा एक पात्र इसाखाँ पठान सल्तन का बादशहा, कर्तव्यदक्ष, देशप्रेमी के रूप में चित्रण हुआ है। अन्य पात्रों के रूप में हसन जो निजाम और शेरखाँ के पिताजी सहसरों के जहागीरदार, देशभक्त, पुत्रप्रेमी के रूप में चित्रण हुआ है। साथ ही और एक पात्र रेहमान का चित्रण भी हुआ हैं , जो निजाम और शेरशाह के सच्चे सेवक के रूप में चित्रण हुआ है।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सेठ गोविन्ददास जी के कुछेक काल्पनिक पात्रों को छोडकर अधिकांश चरित्र ऐतिहासिक है। सेठ जीने अधिकांश पात्रों के चरित्रविकास, चरित्रचित्रण एवं उनकी व्यक्तित्व प्रतिष्ठा में अत्याधिक शिल्पकौशल का परिचय दिया है। पात्रों के चरित्र का विकास बाहय और अर्न्तव्दंव्द के बीच बडे कलात्मक ढंग से होता चलता है। नाटककार ने चरित्रचित्रण में सहायक उन सभी साधनों, पात्रों के कार्यकलाप, संवाद, अन्य पात्रों के कथन, स्वगत का सफल प्रयोग किया है। भारतीय नाटयशास्त्र के अनुसार इन नाटकों के मुख्य चरित्र अत्यन्त सशक्त एवं सप्राण हैं। साथ ही सेठ जी के विवेच्य नाटकों के कई मुख्य पात्रों के चरित्र विकास के लिए विरोधी गुणों से युक्त प्रतिनायक पात्रों की उद्‌भावना की गई है। स्त्री पात्रों का चरित्रचित्रण भी कलात्मक ढंग से हुआ है। इससे सेठ जी नाटकों का चरित्रचित्रण करने में सफल हुये है।

3.4 कथोपकथन या संवाद -

कथोपकथन नाटक के तत्वों में प्रमुख एवं परमावश्यक तत्व है। नाटककार इसी एकमात्र उपकरण के माध्यम से नाटकीय वस्तु को गतिशील करने, नई परिस्थितियों की

सूचना देने, पात्रों के चरित्र को प्रस्फुटित करने, उनके अंतर्द्वंद्व को प्रदर्शित करने तथा उचित वातावरण प्रस्तुत करने एवं उद्देश के समष्टिगत प्रभाव को पूर्ण करने में सफल होता है। चुटकीले, अर्थपूर्ण: नुकीले, संक्षिप्त संवादों से नाटकीय शोभा बढती है। नाटक दृकश्राव्य विधा है। मुख संवादों से सभी बातें सुस्पष्ट नहीं हो सकती। नाटककार का जीवनदर्शन पात्रों के क्रिया-कलाप और विचार अभिव्यक्त करने के लिए संवादों का कार्य अनन्य साधारण रहता है।

भावों की अभिव्यक्ति के लिए अथवा विचार-विनिमय के लिए कथन का प्रयोग किया जाता है उसे ही कथोपकथन या संवाद कहते हैं। नि:संदेह नाटक के विभिन्न उपकरणों को एकसूत्र में पिरोकर नाटक का रूप प्रदान करनेवाला तथा नाट्य शरीर में सजीवता का संचार करनेवाला यही एकमात्र तत्व है। कथोपकथन का महत्व नाटकों में दिन-ब-दिन बढता ही जा रहा है क्योंकि कथावस्तु का विकास पात्रों के चरित्र का परिचय, घात-प्रतिघात आदि के लिए इसी का सहारा लेना पडता है। कथोपकथन के बिना नाटक ही नहीं हो सकता। कम समय में कई घटनाएँ एवं पात्रों के चरित्र का विकास आदि नाटक में दिखाना पडता है और इसके लिए कथोपकथन का सहयोग महत्वूपर्ण है।

कथोपकथन की आवश्यक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

1) कथा के विकास में सहयोग

2) चरित्र पर प्रभाव आदि

भाव और भाषा जब स्पष्ट हो जाती है तभी कथोपकथन स्पष्ट हो जाता है। कथोपकथन की गती पर ही नाटक का विकास अवलंबित रहता है।

संवादों का सरल, संयत, सुबोध, सजीव और प्रभावोत्पादक एवं कलात्मक होना आवश्यक है। उनमें प्रवाह एवं चपलता के तत्व भी अनिवार्य रूप में आने चाहिए। इसके अतिरिक्त इनका सुगठित, व्यंजनात्मक, सारगर्भित एवं तर्कपूर्ण होना आवश्यक है। इसके साथ ही कथोपकथन करते समय नाटकों में स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, सरलता, पात्रानुकूलता, गतिशीलता, मनोरंजनपूर्णता, सबंद्धता, रोचकता, मार्मिकता आदि गुणों का होना आवश्यक है।

कथोपकथन निम्न प्रकार के होते है -

1. कथा को गति देनेवाले कथोपकथन.
2. चरित्र को अभिव्यंजित करनेवाले कथोपकथन.
3. सामाजिक चित्रण सम्बधी कथोपकथन.

उपर्युक्त कथोपकथनों के प्रकारों का हम संक्षिप्त में विवेचन करेंगे -

3.4.1 कथा को गति देनेवाले संवाद -

नाटक में पात्रों के विरोध पूर्ण जो संवाद होते हैं वह कथा को गति देनेवाले होते हैं। आदेशात्मक संवाद और स्वाभाविक सूचक संवादों में भी कथानक को गति देने की शक्ति होती है।

सेठ जी के 'हर्ष' नाटक में आवन्ती और सिंहनाद के संवाद में राजवर्ध्दन की हत्या शशांक नरेन्द्रगुप्त से न ले पाने से राज्यसभा के सदस्य दु:खी और निराश है। साथ ही हर्षवर्धन सिंहासन ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं है। परन्तु सिंहनाद के कथन से हर्षवर्धन पर राजवर्ध्दन के वध और राज्यश्री के बन्धन का प्रभाव दिखायी पडता है। इस कथा से कथानक को आगे गति मिलती है। संवाद में हर्ष और माधवगुप्त की प्रगाढ मित्रता को भी रहस्यपूर्ण बताना कथानक को गति प्रदान करता है। हर्ष और भण्डि के कथोपकथन में पुन: राज्यश्री के विंध्य की ओर चले जाने की सूचना से कथा आगे बढती है, क्योंकि इस संवाद में हर्ष उव्दिग्न दिखायी देते हैं।

'शशिगुप्त' नाटक में सिकंदर और सेनापति सिल्यूकस के संवाद में शशिगुप्त का नाश करने की तथा मगध देश का राजा नन्द पर आक्रमण करने की योजना जब यूनान सम्राट विश्वविजेता सिकंदर जब बना रहा था तब हेलन और आर्यवर्त दु:खी और निराश हो जाते है। परन्तु चाणक्य की कूटनीति और दूरदृष्टी से शशिगुप्त गुरू की आज्ञा से शशिगुप्त को युध्द करने के लिए गति मिलती है। संवाद में चाणक्य और शशिगुप्त की प्रगाढ गुरू-शिष्य सम्बन्ध को भी रहस्यपूर्ण बताकर कथानक को गति प्रदान की है। साथ ही साथ शशिगुप्त और हेलन का प्रेमवर्णन नाटक में रोमाण्टिक संवादों से वातावरण की निर्मिती हुई

है। शकट्‌ार और मगध का मंत्री राक्षस की देशभक्ति, देशरक्षक और देशभक्षक इन संवादों से शशिगुप्त नाटक में सजीवता आ गयी है।

'शेरशाह' नाटक में कविहृदयी निजाम और चुनार की दौलतमंद और सौंदर्यवती लाडबानू (बेगम) दोनों के संवादों से शेरशाह नाटक के कथानक को गति प्राप्त होती है। साथ-ही-साथ शेरशाह और उनका मित्र ब्रह्मादित्य दोनों के कार्यो से इस कथानक को गति मिलती है।

3.4.2चरित्र-चित्रण सम्बन्धी कथोपकथन -

दर्शकों को पात्रों के चरित्रचित्रण का ज्ञान उनके कथोपकथन से कराते है। 'हर्ष' नाटक में अलग-अलग पात्र अपने व्यक्तिगत विशेषता से मूर्तिमान रहते हैं। प्रत्येक पात्र का अपना अलग व्यक्तित्व रहता है। वे पात्र अपने कौशल से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करते हैं। 'हर्ष' नाटक का प्रारंभ सिंहासन ग्रहण करने की समस्या से होता है। माधवगुप्त के कहने पर हर्ष सिंहासन ग्रहण करता है। प्रजाहित और प्रजाप्रेमी होने के कारण सिंहासन ग्रहण करते वक्त हर्ष राजा विवाह न करने की और व्यर्थ का रक्तपात न करने की शपथ लेता है। तब उस वक्त सभा भवन में हर्ष के प्रति आदर्श प्रतिमा प्रजा के मन में हमेशा के लिए घर करती है। हर्ष राजा कथनी और करनी में कभी भी फर्क नहीं करता। उसके विचार बहुत ही आदर्श हैं। एक जगह पर वह कहता है - "मैं अपने को राज्य का संरक्षक मात्र मानना चाहता हूँ और राज्य को अपने पास प्रजा की धरोहरा मैं अपने और अपने वंश को राज्य का स्वामी और राज्य को अपनी सम्पत्ति नहीं मानना चाहता।"[7] इन्हीं विचारों पर निश्चित होने से उनके चरित्र से इस नाटक संवादो से इस कथानक को गति मिली है। साथ ही इस नाटक का दूसरा पात्र आदित्यसेन और शशांक नरेन्द्रगुप्त की कूटनीति से संबद्‌ध संवादों से इस नाटक के कथानक को गति मिली है। शशांक कहता है, "शत्रू पर निर्बलता के अवसर पर आक्रमण किया जाय। मैंने आपसे कहा न कि मैं हृदय से नहीं, मस्तिष्क से शासित होता हूँ। अब हर्ष के विरूध्द विद्रोह का ठीक अवसर आ गया है, उसके निधन कार्य का भी ठीक समय उपस्थित हुआ है। अब बौध्द धर्म के मूलोच्छेदन और आर्य धर्म की नींव दृढ करने का समय भी आ गया है। इतने वर्ष और युगों तक जिस घडी की प्रतीक्षा की, सौभाग्य से वह आ

गयी है।''[8] इस प्रकार के संवादों के माध्यम से कथानक आगे बढता है और उसमें रोचकता आ जाती है।

'शशिगुप्त' नाटक में गुरू चाणक्य और शिष्य शशिगुप्त के संवाद महत्वपूर्ण हैं। शशिगुप्त का चरित्र बहुत ही महान है। वह एक शूरवीर, आदर्श राजा, प्रजाहितदक्ष है। उसके इस व्यक्तित्व की झलक चाणक्य के इस संवाद से मिलती है, ''वत्स, इस समय आर्यावर्त में तुम से अधिक वीर, तुमसे अधिक साहसी, तुम से अधिक आदर्शवादी, तुमसे अधिक देशभक्त, तुमसे अधिक शुध्द अन्तकरण और आचरणवाला और कोई व्यक्ति नहीं। तुम्ही यूनानियो को इस देश से निकाल इस देश में एक साम्राज्य की स्थापना कर सकते हो, उसके चक्रवर्ती सम्राट हो सकते हो। तुम्हारी जीत इस देश को संसार का पुनः सर्वश्रेष्ठ देश बना सकती है और तुम्हारी हार इसे शताब्दियों के लिए दास''[9] इतना उसका महान व्यक्तित्व है और प्रमुख रूप से इन दोनों के संवादो से ही इस कथानक को गति मिलती है।

सिल्यूकस और सिकंदर इन दोनों पात्रों के क्रिया-कलापों एवं व्यवहारो से कथानक गतिशील होता है। साथ-ही-साथ सिल्यूकस की बेटी हेलन और भारत सम्राट शशिगुप्त इन दोनो के प्रणय वर्णन और देशभक्त का वर्णन बडा सुंदर है। एक बार हेलन अपने पिताजी से कहती है कि - ''पिताजी, देशभक्त देशद्रोही से विवाह नहीं कर सकता। स्वर्ग और नरक का सम्बन्ध नहीं हो सकता। पूर्णिमा और अमावस्या में प्रेम सम्भव नहीं। दिन और रात का सम्बन्ध कैसा ? मैं देशभक्त, शशिगुप्त देशद्रोही। आकाश और पाताल कैसे मिल सकते हैं ?''[10] कथानक को गति मिलती है।

'शेरशाह' नाटक में निजाम और लाडबानू के प्रणय-संवादों से नाटक रोमाण्टिक मोड पर आकर खडा होता है। इन दोनों के संवाद नाटक में बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इन दोनों के संवादो से ही और उनके चरित्र से एक विशिष्ट प्रकार की गति मिलती है। ''मुसव्विर मेरे दिल को चाहता था और मैंने... मैंने भी आँखो के रास्ते दिल उसकी नजर कर दिया। यह... यह सब हो गया, नसीम, आगरे के उस बाग में, उन तीन दिनों के अन्दर, जब मेरी तस्वीर बन रही थी।''[11] इस प्रकार के संवादों से कथानक को गति मिलती है। साथ-ही-साथ

शेरशाह और बह्मादित्य के संवादो से हिन्दू-मुस्लिम में एकता की स्थापना करने का प्रयत्न दिखायी देता है। साथ ही पात्रों के व्यावहारिक क्रिया कलापों से कथानक को गति देने का प्रयास नाटककार ने सफलतापूर्वक किया है। ''मैं चाहता हूँ इस मुल्क के हिन्दू मुसलमान दोनों मिलकर इस बाहरी कौम का मुकाबला करें। शेरखाँ साहब को देश से प्रेम है इसीलिए हिन्दू, मुसलमान दोनों से प्रेम है। वह मुसलमान इसलिए है कि मुसलमानों के घर उनका जन्म हुआ है, लेकिन हिन्दूओं का भला करनेवाला उनसे अधिक कोई हिन्दू नहीं है। हिन्दुओं को भी वे उतने ही प्यारे हैं जितने मुसलमानों को।''[12] साथ-ही-साथ शेरशाह के पिताजी हसन अपने पुत्र के प्रति स्नेहमयी दिखायी देते हैं।

3.4.3सामाजिक चित्रण सम्बन्धी कथोपकथन -

सेठ गोविंददास के विवेच्य नाटकों में देशकालनुसार सामाजिक परिस्थिति, तत्कालीन राजनैतिक अवस्था की झलक हमें देखने को मिलती है। नाटक में पात्रों के वार्तालाप से सामाजिक स्थिति की जानकारी मिलती है।

सेठ गोविन्ददास जी के विवेच्य नाटकों में विशेष रूप से उँच-नीच भेद, अस्पृश्यता, विधवा समस्या, एकता की समस्या आदि विविध समस्याओं से सम्बन्धित कथोपकथनों से समाज का पूर्ण प्रतिबिम्ब प्रस्तुत होता है। नाटक के कथोपकथन के माध्यम से घृणास्पद सामाजिक जीवन भी हमारे सामने प्रस्तुत होता है।

सेठ गोविन्ददास जी के हर्ष, शशिगुप्त, शेरशाह में अनेक संवाद सामाजिक अवस्था को व्यक्त करते है। आधुनिक जीवन और समाज की विविध समस्याओं का चित्रण नाटककार हमारे सामने पात्रों के कथोपकथन से प्रस्तुत करता है। 'हर्ष' नाटक में भी सामाजिकता का चित्रण बडे ही कुशलतापूर्वक किया है। इस नाटक में ब्राम्हण और बौध्द धर्मो में संघर्ष चलता है। उस समय धर्मों के आधार पर उच्च-नीचता, अस्पृश्यता, विधवा स्त्रियों की समस्या प्रखर रूप में थीं। जब हर्ष राजा अपनी विधवा बहन राज्यश्री को राज्य सिंहासन पर बिठाना चाहता है तो समाज के लोग उन्हे विरोध करते हैं। क्योंकि विधवा को समाज में स्थान नहीं है। विधवा अपशकुनी होती है ऐसा सभी मानते हैं। इसी कारण ब्राम्हण लोग

राज्यश्री को राज्यसिंहासन पर बिठाते समय तीव्र विरोध करते हैं। तब उनमें निम्न प्रकार चर्चा होती है -

" एक ब्राम्हण - फिर बन्धुओ, यह तो बतलाइए कि हम अधर्म का कौनसा कार्य कर रहे हैं?

दूसरा ब्राम्हण - स्त्री का राज्याभिषेक अधर्म नहीं तो क्या है ?

तिसरा ब्राम्हण - वह भी विधवा का, जिसे किसी भी मंगलकार्य में भाग लेने का अधिकार नहीं है।"[13]

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि विधवा को समाज में कहीं भी स्थान नहीं था। इस प्रकार के कई संवादों से सामाजिक स्थिति का चित्रण हमारे सामने आता है।

'शशिगुप्त' नाटक में सेठ गोविन्ददास जी आधुनिक ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर एक साम्राज्य की स्थापना करना चाहते हैं। इसके लिए उस वक्त की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थिति की जानकारी उनके 'शशिगुप्त' और चाणक्य के वार्तालाप से मिलती है। उस वक्त की सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थिति का वर्णन भी कथोपकथन से स्पष्ट होता है। उस वक्त समाज में सभी ओर अशांति थी। किसी से अपनी मुलभूत आवश्यकताएँ पूरी नही होती थी। शशिगुप्त और नन्द इन दोनों में सामाजिक विषमता के कारण आपत्ती-झगडे में लिप्त थे। उस वक्त भारत में पंचनद-पर्वतक और मगध नन्द यही दो ही बलाढ्य और शक्तिशाली राजा थे। इन दोनों में आपसी संघर्ष हमेशा रहता था। इसका मुनाफा यूनान सम्राट सिकंदर उठाता है और पर्वतक से युध्द करता है। उस युध्द में पर्वतक राजा हार जाता है और सिकंदर से शरणागती पाता है। लेकिन इन राजाओं के आपसी संघर्ष का परिणाम समाज के लोगो पर हो जाने से सामाजिक स्थिति बिगड जाती है। इसी कारण उस वक्त की सामाजिक स्थिति अशांत थी।

'शेरशाह' इस नाटक में थी सामाजिक स्थिति का चित्रण बडे ही कुशलतापूर्वक किया है। इस नाटक में मुस्लिम युग का चित्रण दिखायी देता है। उस वक्त मुस्लिम और हिन्दू धर्मो में सामाजिक विषमता थी। समाज में जहागीरदारी की प्रथा रूढ थी। शेरशाह के

पिताजी हसन बडी मुश्किलों का सामना करके रात दिन मेहनत करके अपने पुश्तैनी की जागीर संभालते है। उस वक्त की सामाजिक स्थिति अच्छी थी। वातावरण शांतिपूर्ण था।

3.5 देशकाल वातावरण -

नाटक मानव जीवन का चित्रण है। जिसमें प्रधानता मनुष्य के चरित्र का सजीव वर्णन रहता है। निश्चय ही मनुष्य का संबंध अपने युग, समाज, देश और परिस्थितियों से रहता है अथवा मानव की पृष्ठभूमि के रूप में देशकाल का चित्रण एक आवश्यक अंग है।

नाटक की कथा को सत्य रूप देने के लिए उसे सजीव बनाने के लिए वातावरण की सृष्टी नाटककार के लिए अनिवार्य है। व्यक्तित्व के निर्माण में वातावरण का बहुत कुछ हाथ होता है इसलिए उसके व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए भी नाटक में वातावरण की सृष्टि अनिवार्य है ! कु. शशिबाला पंजाबी के मतानुसार - "वातावरण उन समस्त परिस्थितयों का संकुल नाम है, जिन पात्र और कथानक को संघर्ष करते हुए आगे बढना होता है।"

नाटक में देशकाल और वातावरण चित्रण के कुछ सांकेतिक आधार और गुण है, जिनका पालन करना नाटककार के लिए आवश्यक हो जाता है। देशकाल वातावरण का चित्रण करते समय वर्णनात्मक सूक्ष्मता, विश्वसनीय कलात्मकता, उपकरणात्मक सन्तुलन, चित्रात्मकता, वास्तविकता इन गुणों का होना आवश्यक है।

देशकाल वातावरण से तात्पर्य है - समाज में वर्णित आचार-विचार, रीति-रिवाज, रहन-सहन और परिस्थिति आदि से नाटकों में स्वाभाविकता और सजीवता का आभास देने के लिये देशकाल तथा वातावरण का ध्यान रखना पडता है। प्रत्येक पात्र और उसका कार्य किसी विशिष्ट देश, समय और वातावरण में होता है। अत: नाटक की पूर्णता के लिये इन सबका वर्णन आवश्यक है।

वातावरण के विषय में यह अत्यंत स्मरणीय है कि यह कथानक एवं चरित्र के प्रकाशन तथा स्पष्टीकरण का साधन मात्र है। अत: साधन कहीं साध्य बन जाए या साध्य के व्यक्तित्व आद्यन्त आच्छादित करके हीन एवं उपेक्ष्य न बना दे, इस मूल पकड का ध्यान निर्माता को आरंभ से ही होना चाहिए। वातावरण में देशकाल ग्राह्य है और साथ ही आन्तरिक मनोदशा

का भी चित्रण उसमें हो। इन दोनों के द्वारा ही सच्चा एवं पूर्ण वातावरण तैयार होता है। प्राकृतिक चित्रण और पात्रों की मानसिक स्थिति का सामंजस्य नाटक को पर्याप्त मात्रा में स्पंदनयुक्त, सरस एवं प्रभावी बनाता है।

विवेच्य नाटकों में चित्रित देशकाल एवं वातावरण का मूल्यांकन हम निम्नलिखित दृष्टियों से कर सकते है- सेठ गोविन्ददास जी के 'हर्ष' नाटक में सातवी सदी के ऐतिहासिक वातावरण का बडी अच्छी तरह से समाविष्ट है। उस समय की धार्मिक और राजनीतिक अवस्था का चित्रण इतिहास तथा साहित्य प्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। नाटक के अवलोकन से नाटककार के साहित्यिक परिमाण, इतिहास-कुशलता, अर्थ-गौरव और भावनाधिकार की प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता।

इस नाटक की कथावस्तु सुसंगठित है और इतिहास-शृंखला भी कहीं भी अस्त-व्यस्त नहीं है। इस नाटक में ऐतिहासिक परिस्थति का बडा ही सूक्ष्म चित्र नजर आता है। उस काल में सम्राट हर्षवर्धन स्थाण्वीश्वर के राजा और भारत के अन्तिम हिन्दू सम्राट थे। उनकी बहन राज्यश्री और उनका संयुक्त राज्य था। हर्षवर्धन के समय के भारत का यह नाटक सजीव चित्र है। तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक वातावरण, स्थिति और व्यवस्था का चित्रण सजीव है। नाटक द्वारा उस युग का जीता-जागता चित्र हमारे सम्मुख उपस्थित हो जाता है।

राजनीतिक क्षेत्र में उस समय सम्राटों और साम्राज्य का महत्व था। हर्षवर्धन के वंश का उत्थान हो रहा था और गुप्तवंश का पतन हो चुका था। हर्ष के प्रतिव्दंद्वी गुप्तवंशी शशांक नरेन्द्रगुप्त थे। गुप्तवंश के ही वंशज माधवगुप्त हर्ष के अभिन्न मित्र थे, परंतु माधवगुप्त का पुत्र आदित्यसेन अपने पिता और हर्ष का कट्टर विरोधी था। उस समय के राजनीतिक वायुमंडल और आपसी संघर्ष में हर्ष, शशांक, माधव और आदित्यसेन की भावनाएँ नाटक में अत्याधिक सजीवता से अंकित हुई है।

धार्मिक क्षेत्र में उस समय आर्य और बौध्द धर्मों का संघर्ष था। नाटककार ने उसे भी बडी सफलता से इस नाटक की पृष्ठभूमि में अंकित किया है।

सामाजिक क्षेत्र में राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्रों का तो प्रभाव था ही, परन्तु राज्यश्री

को साम्राज्ञी बनाकर हर्ष एक नया आदर्श खडा कर देता है। राज्यश्री हर्ष की बहन है, लेकिन अब वह विधवा है। हर्ष राजा अपनी बहन राज्यश्री को सम्राज्ञी बनाना चाहते हैं। लेकिन राज्यश्री विधवा स्त्री होने के कारण सब ब्राम्हण विरोध करते हैं। उन्हें यह मान्य नहीं है। साथ ही जो कट्टर विरोधक ब्राम्हण थे वे सब हर्ष के शत्रु बनते हैं। फिर भी इन सबका विरोध सहकर हर्ष राजा बडे ही उत्साह से उसे सम्राज्ञी बनाता है और समाज के सामने नया आदर्श निर्माण करता है। इस प्रकार समाज में प्रचलित रीति-रिवाजों का वर्णन नाटककार ने बडी कुशलता से किया है। हर्ष स्त्री को पुरूष के बराबर का स्थान देना चाहता है। वह किसी को कम नहीं मानता है। जब राज्यश्री ही हर्ष को बताती है कि विधवाओं को समाज में स्थान नहीं होता। साथ ही मंगल कार्य में तो उनका आना अशुभ ही माना जाता है, तब हर्ष राजा स्पष्ट रूप से कह देता है कि - ''मैं राज-काज में भी स्त्रियों को पुरूषों के समान अधिकार देने की परिपाटी चलाना चाहता हूँ। यदि पुरूष सिंहासनासीन हो सकते हैं, तो स्त्रियाँ भी, विधवाएँ भी।''[14] इस प्रकार उस समय की सामाजिक स्थिति का विरोध करता है। चीनी यात्री यानचाँग हर्ष के राज्य-काल में ही भारत में आया था और उसने जो देखा उसका वृतान्त लिखा है। सेठ जी ने यानचाँग सम्बन्धी भी कुछ दृश्य उपस्थित किये हैं।

इस प्रकार सेठ जी का हर्ष नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी यह राजनीतिक सामाजिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों का चित्रण करने में सफल बन चुका है।

साथ ही आंतरिक वातावरण में घटनाओं और परिस्थितियों का चित्रण, पात्रों की मानसिक स्थिति का चित्रण और पात्रों के हावभाव और अंतर्द्वंद्व का चित्रण आता है।

'हर्ष' नाटक में इतिहास प्रसिध्द सम्राट हर्षवर्धन की घटनाओं से संबंध होता है। नाटक का आरम्भ राजवर्ध्दन के वध की घटना के पश्चात होता है। इसमें राजकुमार शिलादित्य के, मित्रों की प्रेरणा एवं कर्तव्य की पुकार से राज्यग्रहण करने, विन्ध्य पर्वत-प्रदेश के चितारोहण को तैयार राज्यश्री को लौटाने, राज्यश्री को सम्राज्ञी बनाकर स्वयं बहन के संरक्षक रूप में कार्य करने, सारे आर्यावर्त्त को एक साम्राज्य में परिणित करने, आर्य और बौध्द धर्म के एकीकरण के लिए शिव, आदित्य एवं बुध्द के संयुक्त पूजन का श्रीगणेश करने तथा सर्वस्व सम्पत्ति दान देने आदि घटनाएँ वर्णित हैं।

हर्ष राजा बौध्द धर्म से प्रभावित होने के कारण वह राज्य-कारोबार चलाना नही चाहता। वह तो बौध्द धर्म का अनुयायी बनकर भिक्षुक बनना चाहता है। लेकिन उनका बालमित्र माधवगुप्त उसे रोकता है और राज्यग्रहण करने के लिए कहता है। तब उस वक्त की हर्ष राजा की मानसिक स्थिति का चित्रण नाटककार ने बडे ही मार्मिक ढंग से किया है।

साथ ही हर्ष राजा जब राज्यग्रहण करता है तब वह विवाह न करने की और व्यर्थ का युध्द-रक्तपात न करने की प्रतिज्ञा करता है। क्योंकि उनके मतानुसार विवाह करने से संतान की प्राप्ति हो जायेगी। संतान को अगर निकम्मा और विलासपूर्ण जिंदगी जी लेने की आदत पड जाये तो राज्य और प्रजा का क्या होगा ? साथ ही साथ वह यह भी सोचता है कि व्यर्थ का युद्ध का रक्तपात करने से जो राज्य हमें मिल जाता है उसमें निष्पाप लोगों की बददुआएँ रहती हैं, उसमें शान्ति और सुकून नहीं रहता। इसी प्रकार के नाना वितर्क से उसका मन सदैव भरा रहता है। तब हर्ष राजा की मानसिक स्थिति तथा अंतर्व्दव्द का स्पष्ट चित्रण हमें नाटक में मिलता है। इस प्रकार के कई उदाहरण इस नाटक में आये हैं।

'शशिगुप्त' नाटक 1942 में प्रकाशित होता है। तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक स्थिति और व्यवस्था का सजीव चित्रण सेठ जी ने इस नाटक में किया है।

इस नाटक की कथावस्तु सुगठित है। नाटक में ऐतिहासिक परिस्थिति का चित्रण नाटककार ने बडी सूक्ष्मता से किया है। नयी खोजों और नये दृष्टिकोनों पर आधारित यह नाटक है। साथ-ही-साथ प्राचीन युग में यूनान सम्राट सिकन्दर की कथा और गुरू चाणक्य की दूरदृष्टी दिखायी देती है। शशिगुप्त अश्वक जाति का सम्राट था। पश्चिमोत्तर भारत की कुछ सेना लेकर शशिगुप्त सिकन्दर से युद्ध करता है ओर उस युध्द में शशिगुप्त हार जाता है। शशिगुप्त ने सिकन्दर के साथ पहले तो मेल कर ली। पुन: अवसर पाकर सिकन्दर से युध्द किया और भारत का सम्राट बना।

राजनीतिक क्षेत्र में सम्राट चन्द्रगुप्त और सम्राट सिकन्दर में संघर्ष दिखायी देता है। तक्षशिला का राजा देशद्रोही आम्भीक से विश्वविजेता सिकन्दर से मिल जाता है। पंचनद देश का राजा पर्वतक सिकन्दर से युध्द करता है। परन्तु उस युध्द में हार जाने के बाद सिकन्दर से शरणागती स्वीकारता है। उस वक्त भारत देश में शक्तिशाली और बलाढ्य

दो राज्य थे। एक मगध और दूसरा पंचनद। मगध का राजा नन्द विलासप्रिय, निष्कर्मी, दुर्बल राजा और नर्तकियों में हमेशा मग्न रहनेवाला, आलसी राजा रहता है। नन्द की विलासिता के कारण ही सिकन्दर, पर्वतक और आम्भीक तीनों मिलकर मगध पर आक्रमण करना चाहते हैं। लेकिन चाणक्य की कूटनीति के कारण और शशिगुप्त के पराक्रमी वीरता के कारण शशिगुप्त सम्राट बन जाता है। शशिगुप्त अचानक सिकन्दर पर ही आक्रमण करता है। इस प्रकार उस समय का राजनीतिक वातावरण और आपसी संघर्ष को नाटक में सजीवता से अंकित किया है।

धार्मिक क्षेत्र में उस समय ब्राह्मणो का वर्चस्व रहता है। सिकन्दर मुस्लिम और विदेशी राजा होने के कारण शशिगुप्त से घृणा करता है। उस वक्त सिकन्दर को ही आर्यधर्म के भगवान के चरण छूकर दर्शन लेने पडते हैं।

सामाजिक क्षेत्र में सभी ओर उथल-पुथल मची हुयी थी। सेठ गोविन्ददास जी ने शशिगुप्त द्वारा समाज में शांति प्रस्थापित करने का कार्य किया है। उस वक्त पश्चिमोत्तर भारत की कुछ सेना और सिकन्दर में युध्द हुआ। समाज में हर तरफ कोलाहल और अशांति का वातावरण था। इस सेना का नायक शशिगुप्त था। समाज में एक नेतृत्व की आवश्यकता थी। अश्वक जाति में सरदार के नाम से शशिगुप्त की नियुक्ति हुयी। समाज में देशप्रेम, राष्ट्रीय गौरव और भारतीय संस्कृति तथा गुलामी के बोझ से समाज पूर्ण रूप से झुका हुआ था। जातीय गौरव और राष्ट्रीयता का मंत्र फुँकने का कार्य शशिगुप्त ने किया। सर्वधर्मसमभाव, जातीय एकता, आपसी संघर्ष को मिटाकर सिकन्दर से युध्द करके और हेलन से विवाह करके उस वक्त के सामाजिक बंधनों को निभाते हुए एक साम्राज्य की स्थापना शशिगुप्त ने की।

निष्कर्षत: समाज में विभिन्न रूढी, प्रथा, परंपरा को त्यागकर शशिगुप्त ने चाणक्य के कहने पर हेलन के साथ विवाह किया। समाज में फैली हुई अनेकता को एकता के सुत्र में पिरोने का कार्य किया।

इस प्रकार इस नाटक में ऐतिहासिक परिस्थितियों का वर्णन सफलता के साथ हुआ है। साथ ही तत्कालीन घटनाओं और परिस्थितियों का चित्रण, पात्रों की मानसिक स्थिति का चित्रण और पात्रों के हावभाव तथा पात्रों के अंतर्व्दव्द का चित्रण भी मिलता है।

'शशिगुप्त' नाटक में यूनान सम्राट सिकन्दर के भारत पर आक्रमण, अश्वक जाति का सरदार शशिगुप्त द्वारा उसका प्रतिरोध, आम्भीक का देशद्रोह, सिकन्दर से मिलना, चाणक्य की कूटनीति के निर्देश पर सिकन्दर पर आक्रमण की योजना बनाना, सिकन्दर का सिंध और मकरान मार्ग से लौट जाना, पर्वतक और सिकन्दर का युद्ध, मगध का राजा नन्द का विलासप्रिय जीवन, प्रजा के मन में नन्द के प्रति अनास्था, चाणक्य की कूटनीति, दूरदृष्टी और राजनीति के कारण पर्वतक की विषकन्या द्वारा हत्या और नन्द शट्कार के द्वारा वध, भारत का सम्राट चन्द्रगुप्त और हेलन से विवाह करने की योजना में पूर्ण रूप से चाणक्य को सफलता मिली है। इन विविध घटनाओं और परिस्थितियों का चित्रण विवेच्य नाटकों में किया है।

यूनान सम्राट, विश्वविजेता सिकंदर पर जब शशिगुप्त अचानक आक्रमण करता है तब सिंकदर क्रोधित होकर उठता है। शशिगुप्त के प्रति घृणा का अनुभव करता है। सिकंदर के मतानुसार शशिगुप्त ने उसके साथ विश्वासघात और फरेब किया है। शशिगुप्त सिकन्दर का अधीन था। सिकन्दर राजा सोते हुए उठकर अपने सैनिकों से फौरन शशिगुप्त को मारने की आज्ञा देता है। लेकिन जादातर सैनिक भारतीय होने के कारण अपने अपने अस्त्र-शस्त्र फेंककर हाथ उपर करके शशिगुप्त से मिल जाते हैं। उस वक्त की सिकन्दर की मानसिक स्थिति अस्तव्यस्त रहती है और खाली हाथ सिकन्दर को लौटना पडता है।

इस प्रकार नाटककार ने अनेक पात्रों की मानसिक स्थिति का चित्रण बडे मार्मिक ढंग से किया है।

3.6 भाषाशैली -

3.6.1 भाषा

भाषा का नाटक की आंतरिक संरचना और बाह्य स्थितियों से संबंध होता है। लेखक अपनी भाषा में अपने भावों और विचारों को पाठकों के सामने रखता है। बिना भाषा के किसी साहित्यिक कृति की कल्पना नहीं की जा सकती। रचनाकार भाषा द्वारा ही अपने भावों को सशक्तता, गंभीरता, अनुरूपता और चित्रांकन करने का सामर्थ्य किसी कृति को

सप्राणता एवं सजीवता प्रदान करने में पूर्णरूपेण सहायक होती है। भाषा मानव जीवन को प्रस्तुत करती है। भाषा भी मूलत: मानव समाज की ही रचना है। अत: किसी भी विद्या की रचना को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करने में उसमें प्रयुक्त भाषा का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। भाषा का संबंध भाषागत रूप रचना से है। डॉ. प्रतापनारायण टंडन के अनुसार - "मानव के पास भावों को व्यक्त करने का सर्वाधिक सबल माध्यम भाषा ही है। जो साहित्यकार भाषा पर अधिकार रखते हुए उसे केवल साधन ही नहीं साध्य भी मानकर चलता है, वही प्रभावी अभिव्यक्ति के द्वारा किसी विशिष्ट कृति में अपने पाठकों को बाँधे रखकर प्रभावित एवं आप्लावित भी कर सकता है। नाटककार की मूल एवं वांछित संवेदनाओं को स्पष्ट अभिव्यंजित कर पाने में समर्थ भाषा को ही सफल कहा जा सकता है।"[15] अत: संदर्भो के अनुसार भाषा भी यथार्थ होनी चाहिए।

इस तरह साहित्यकार किसी प्रकार की शब्दयोजना करता है, किस प्रकार के वाक्यांशों का निर्माण करता है ? तथा उसकी रचना से किस प्रकार की ध्वनि उत्पन्न होती है ? ये सारी बातें भाषा-शैली के अंतर्गत आती हैं।

3.6.1.1 विवेच्य नाटकों में भाषा-शैली -

नाटककार को अपने भाव एवं विचारों को व्यक्त करने के लिए सरस और सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए। भाषा का प्रयोग युगीन समाज के दृष्टिकोन से हो तो अधिक श्रेयस्कर होता है। परंतु उसमें सफलता का होना आवश्यक है।

भाषा के अंतर्गत शब्द-प्रयोग के विभिन्न रूप, भाषा सौंदर्य के साधन, मुहावरों, कहावतों, सूक्तियाँ आदि रूपों का अध्ययन आवश्यक है। इसका हम संक्षेप में विवेचन करेंगे।

3.6.1.2 विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग -

सेठ जी का भाषा पर असाधारण अधिकार है। मिश्र जी के नाटकों में शब्द के विविध रूप प्रयुक्त हुए हैं। वे विषयानुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं। उन्होंने ऐसी भाषा का प्रयोग किया है, जिसमें अरबी, फारसी तथा उर्दू शब्दों के साथ-साथ अंग्रेजी और संस्कृत शब्दों का भी संमिश्रण है।

'हर्ष' नाटक के संस्कृत शब्द -

'मौखरि', 'सन्देह', 'व्यय', 'अनुगमन', 'आखेट', 'उद्यान', 'खेत', 'दुस्साहस', 'अनन्तर', 'हाथ', 'चिरजीवी', 'पीठ', 'विलंब', 'दण्ड', 'माण्डलिक', 'आयुध','चन्द्रमा', 'ज्वाला', 'आँसू', 'भिक्षुणी', 'निवृत्ती', 'संन्यासी', 'वृथा', 'पतन', 'दाहिनी','पौद्या', 'परमार्थ', 'मण्डप','अग्नि' ।[16]

'शशिगुप्त' नाटक के संस्कृत शब्द -

'ललाट','आभूषण','अपहरण','स्वाधीन','रेत','कपोत','खंग','अविलम्ब','स्वर्ग', 'नरक','कलुषित','पुनीत','मास्तिष्क ', 'संसार','हिंडोला','असीम','उखाड', 'आहुति','अवरोध','भयानक','बालू', 'खजूर','रज','संहार','अभिलाषा','मैत्री', 'दुबला','विषाद','साँस','आचरण','अधीश्वर','हतोत्साह' ।[17]

'शेरशाह'नाटक के संस्कृत शब्द -

'अँगरखा','हिंसा','उन्माद','ताल्लुकात','अभिवादन'।[18] हिन्दी भाषा की जननी होने के कारण भाषा के सहज प्रवाहित करनेवाले उपर्युक्त शब्द हिन्दी में घुलमिल गए हैं। हिन्दी में संस्कृत शब्दों की संख्या काफी है। इसके प्रयोग से भाषा में सहज प्रवाह दिखायी देता है।

- 'शशिगुप्त' नाटक में अरबी शब्द -

'बिदा'[19]

'शेरशाह' नाटक में अरबी शब्द -

'तस्वीर', 'तकलीफ', 'कयामत', 'हिफाजत', 'इन्तजाम', 'तशरीफ', 'फुसरत', 'हराम', 'मुहब्बत', 'मुमकीन','हकीकत','हैसियत','नफरत','वालिदा','महसूस','फौरन', 'हालत','इन्तजार','खिताब','मुश्किल','रिआया','बिलकुल','सलामत','वाकीफ''[20]

'शेरशाह' नाटक में फारसी शब्द -

'अफसोस ','फर्मान','उम्मीद','खामोश','दामन','तबाह','जागीर','बरदाश्त', 'तश्तरी','वापिस' 'बदनामी','नेकनामी''खिदमत', 'जख्म', 'नाकामयाब', 'साजिश', 'सूबेदार', 'बेवकूफी', 'खुशबू'। [21]

'हर्ष' नाटक में देशज शब्द -

'निरर्थक', 'दीवाल' । [22]

'शशिगुप्त' नाटक में देशज शब्द

'दीवाल', 'अनर्थ' ।[23]

'शेरशाह' नाटक में देशज शब्द -

'यकायक', 'अरमान', 'गद्दी', 'सतजुग', 'डेरे', 'दरसन'।[24]

'शेरशाह' नाटक के अनुकरणबोधात्मक शब्द -

'धूमधाम', 'थरथर' । [25]

3.6.1.3 अन्य शब्द -

भाषा में सहज स्वाभाविकता, सुन्दरता तथा अनुकूलता लाने की दृष्टि से नाटककार ने अन्य अनेक प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है। जिसके कारण भाषा प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण बन पडी है।

ध्वन्यार्थक शब्द -

भाषा में सहजता लाने के लिए तथा वातावरण की यथार्थ स्थिति का चित्रण करने के लिए ध्वन्यार्थक शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे 'ढोल पिटना', 'शंख फुँकना' । जिससे भाषा में सहजता तथा वातावरण की यथार्थ स्थिति का चित्रण आया है।

द्विरूक्त शब्द -

भाषा के सौंदर्य में अभिवृद्धि लाने के लिए द्विरूक्त शब्दों का प्रयोग किया जाता है। किन्तु इनकी ज्यादती से भाषा प्रवाह में बाधा भी पहुँच सकती है। नाटककार ने ऐसे शब्दों का प्रयोग भाषा को सहज प्रवाहपूर्ण और स्वाभाविक बनाने के लिए किया हुआ प्रतीत होता है। कुछ शब्द द्रष्टव्य हैं -

'हर्ष' नाटक में द्विरूक्त शब्द -

'बार-बार', 'चुन-चुन', 'फाड- फाड', 'हरे-हरे', 'लाल-लाल' आदि।[26]

'शशिगुप्त' नाटक में द्विरूक्त शब्द -

'उँची-उँची', 'बैठते- बैठते', 'पीछे-पीछे', आदि।[27]

'शेरशाह' नाटक में द्विरूक्त शब्द -

'जागते - जागते', 'सकरी-सकरी', 'मीठी-मीठी' आदि। [28]

3.6.1.4 मुहावरों से युक्त भाषा -

भाषा को सजीव और प्रभावशाली बनाने के लिए तथा भाषा में मार्मिकता लाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया है। मुहावरों को भाषा में एक महत्तवपूर्ण स्थान होता है। मुहावरें ही हर भाषा की जान है। सेठ जी के मुहावरों का प्रयोग ज्यादा मात्रा में नहीं मिलता लेकिन कुछ स्थानों पर मुहावरों का प्रयोग अवश्य देखने को मिलता है। जैसे-

'हर्ष' नाटक के मुहावरे -

'व्यय होना', 'माण्डलिक होना', 'पतन होना '। [29]

'शशिगुप्त ' नाटक के मुहावरे -

'परिष्कृत होना', 'संहार करना', 'अवतीर्ण होना'।[30]

'शेरशाह' नाटक के

'इन्तजाम करना', 'तशरीफ लाना', 'भैंस के आगे बीन बाजे भैंस खडी पगुरया।'[31]

3.6.1.5 दार्शनिकता से युक्त भाषा -

सेठ जी ने अपने विवेच्य नाटकों में माधवगुप्त शेरशाह, हर्ष, शशिगुप्त,राज्यश्री, आदि पात्रों की भाषा दार्शनिकता से युक्त है। जैसे कि 'हर्ष' नाटक में माधवगुप्त अपने पुत्र प्रेम को त्यागकर अपना मित्र आदर्श राजा हर्ष को अपने जीवन का जीवनादर्श मानता है। शत्रू को फासी देकर समाज में न्याय प्रस्थापित करना चाहता है चाहे वह अपनी इकलौती संतान क्यों न हो ? इस प्रकार के कई उदाहरण आये है।

निष्कर्ष यह कि सेठ जी के विवेच्य नाटकों में दार्शनिकता से युक्त भाषा के दर्शन होते हैं। नाटक की भाष में संक्षिप्त कसावट के प्रयास ने तो इसे दार्शनिकता की कोटि में पहुँचा दिया है। किसी भी भाषा में ऐसी दार्शनिकता का जन्म लेखक की परिपक्तवता एव प्रतिभा का परचायक है। सेठ जी के भाषा - कौशल का यह रूप अत्यंत सराहनीय है।

3.6.1.6 प्रभावशाली भाषा का प्रयोग -

सेठ जी के नाटकों की भाषा का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उसमें विविधता है, स्वाभाविकता है और विषयानुकूलता है। कहीं तत्कालीन समाज एवं मानव की प्रवृत्तियों पर सात्विक क्रोध प्रकट करने के लिए तीक्ष्ण व्यंग्यप्रधान भाषा का प्रयोग किया है और कहीं - कहीं अपनी बात को जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए अत्यंत सरल, सुबोध एवं बोलचाल की भाषा को अपनाया है। इतना ही नहीं अपनी भाषा को अधिकाधिक प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों एवं चुभते हुए वाक्यों से सुसन्नित किया है।

सेठ जी की भाषा प्रौढ, प्रांजल एवं प्रवाहमयी है। नाटकों में प्रवाहपूर्ण छोटे-छोटे वाक्य अर्थों की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। इन नाटकों की भाषा वातावरण का सजीव चित्रण करने में सफल है। वाक्य योजना में संयम है साथ ही शब्दों का चयन बडा मार्मिक एवं अर्थवान है। इसलिए सेठ जी के नाटकों की भाषा अत्यंत प्रभावशाली बन पडी है।

3.7 शैली -

नाटककार को अपने भाव एवं विचारों को व्यक्त करने के लिए सरस और सरल भाषाशैली का प्रयोग करना चाहिए। डॉ. श्यामसुन्दरदास शैली के बारे में कहते हैं -

"किसी कवि या लेखक की शब्दयोजना, वाक्यांशो का प्रयोग, वाक्यों की बनावट और उसकी ध्वनि आदि का नाम ही शैली है।" गुलाबराय के मतानुसार - "शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते है जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को समान रूप से दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।"

शैली शिल्प नाटक के कथानक, चरित्र-चित्रण एवं भाषा आदि को एक ऐसे ढंग से प्रस्तुत करने का कार्य करता है , जिससे नाटकों में नवीनता एवं अभिनव प्रयोग उपस्थित हो सके। शैली का सम्बन्ध रचनाकार के परिवेश, अनुभव, शिक्षा, संस्कार, रूचि आदि का भी उसके निर्माण में विशेष महत्व होता है। शैली में लेखक का व्यक्तित्व ही अंतनिर्हित रहता है। अत : शैली एक कलात्मक उपलब्धि है , उसे अर्जित करना पडता है।

शैली के द्वारा नाटककार अपनी कृति को अधिक आकर्षक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। "नाटककार जिस ढंग से अपने विचार और भावनाओं की अभिव्यक्ति देता है, उसी को शैली कहते हैं।"

शैली में सरलता, रोचकता, प्रवाहपूर्णता आदि गुणों का होना आवश्यक है।

विवेच्य नाटकों में विविध शैलियों का प्रयोग -

3.7.1 वर्णनात्मक शैली

यह लेखन में प्रयुक्त होनेवाली प्रमुख शैली है। इस शैली के माध्यम से सफल चरित्रचित्रण भी किया जाता है। इस शैली में किसी भी शैली या दृश्य या पात्र का सरल और सीधे ढंग से वर्णन किया जाता है। पात्रों की परिस्थितियों एवं उनके परिवेश के चित्रण द्वारा संपूर्णता का आभास दिलाने में विशेष रूप से उपयोगी लगती है। सेठ जी ने विवेच्य नाटकों में इस शैली का प्रयोग बडे अच्छे ढंग से किया है।

हर्ष नाटक का उदाहरण -

" सामने नर्मदा बह रही है। किनारे पर सधन वृक्ष हैं। यत्र तत्र पर्वत के छोटे-छोटे शिखर दिखाई पडते हैं। अँधेरा होता जाता है। आकाश में षष्ठी का धनुषाकार चन्द्रमा तथा कोई तारे दिखायी देने लगे हैं। चन्द्र की किरणें नर्मदा में पड रही हैं, जिनसे उसका नीर चमक रहा है।कटी हुई लकडी के कुछ ठूंठ नर्मदा के तट पर पडे हुए हैं। दो लकड हारिन कटी हुई लकडी का एक-एक गठ्ठा बाँध रही हैं। केवल साडी पहने हुए हैं। दोनों गा रही हैं।"[32]

शशिगुप्त नाटक का उदाहरण -

"एक भारतीय सैनिक के साथ चाणक्य का प्रवेश। भारतीय सैनिक की वेशभूषा वितस्ता के तट के युध्द के सैनिकों के सदृश्य है। चाणक्य का वेश बदला हुआ है। उसे पहचानना कठिन है। उसके श्याम जटाजूट हैं और लम्बी काली दाढी। शरीर पर भस्म लगी है और कौपीन के अतिरिक्त और कोई वस्त्र शरीर पर नहीं है। बगल में मृगछाला है और हाथ में कमण्डल।" [33]

''शेरखॉ अत्याधिक उद्विग्नता से इधर-उधर टहल रहा है। उसका हुक्का भरा हुआ रखा है ,पर उसकी ओर भी उसका ध्यान नहीं है। बार-बार वह द्वार की ओर देखता है, जिससे जान पडता है कि उत्कंठा से किसी की प्रतिक्षा कर रहा है। कुछ ही देर में ब्रह्मादित्य का प्रवेश। ब्रह्मादित्य को देखकर शेरखाँ खडा हो जाता है।''[34]

इस प्रकार अनेक जगहों पर सेठ जी ने वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। जिसके कारण नाटक में सहजता, स्वाभविकता निर्माण हो चुकी है।

3.7.2 विवरणात्मक या विश्लेषणात्मक शैली -

इस शैली के माध्यम से नाटककार कुछ ब्योरे दे देता है जिनकी पाठकों के लिए आवश्यकता होती है। यहॉ भी नाटककार अत्यंत तटस्थ रहता है और विश्लेषण करता चला जात है। इससे पाठकों को घटनाओं या पात्रों के चरित्र की जानकारी प्राप्त होती है।

'हर्ष' नाटक में राज्यश्री के सौंदर्य का वर्णन भी विश्लेषणात्मक शैली का ही नमूना है। जैसे ''राज्यश्री की अवस्था लगभग १५ वर्ष की है, किन्तु अवस्था से उसका वय अधिक जानपडता है। वह गौर वर्ण की सुन्दर युवती है, परन्तु इस समय उसका शरीर क्षीण है और मुख अत्याधिक उतरा हुआ है। शरीर पर श्वेतसाडी और उसी प्रकार का वस्त्र वक्षस्थल पर बँधा हुआ है, साडी अस्त-व्यस्त सी है। सिर के बाल अव्यवस्थित रूप से फैले हुए हैं और सारा शरीर आभूषणों से रहित है।'' [35]

'शशिगुप्त' नाटक में शशिगुप्त के गुणों का वर्णन करते हुए चाणक्य कहते है - ''वत्स, इस समय आर्यावर्त्त में तुमसे अधिक वीर, तुमसे अधिक साहसी, तुमसे अधिक आदर्शवादी, तुमसे अधिक देशभक्त, तुमसे अधिक शुध्द अन्त:करण और आचरणवाला और कोई व्यक्ति नही।'' [36]

'शेरशाह' नाटक का एक उदाहरण - ''हसन की उम्र करीब पचपन साल की है। वह गेहुएँ रंग का,उँचा-पूरा,मोटा-ताजा, आदमी है। सिर पर पट्टे है। चेहरे पर बडी बडी मूँछ और लम्बी दाढी बाल यत्र-तत्र श्वेत हो चले हैं।''[37]

इस प्रकार कभी पात्रों के व्यक्तित्व विश्लेषण के लिए, तो कभी चरित्रगत गुणों को बताने के लिए इस शैली का प्रयोग किया है।

3.7.3 काव्यात्मक शैली -

नाटक को अत्यन्त प्रभावपूर्ण बनाने के लिए काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। इससे नाटक में सहजता ,सुन्दरता आ जाती है। सेठ जी ने इस शैली का प्रयोग काफी मात्रा में किया है।

'हर्ष' नाटक में का एक उदाहरण-

"आज हम होंगी धन्य महान,
प्राप्त कर सबसे उँचा स्थान
अब तक मानव वृन्द में, दक्षिण - वाम- विभाग-
न थे तुल्य, पर अब खुला वान-भाग का भाग
हर्ष ने दोनों को सम जान
किया यह राज्यश्री कामान।"[38]

'शशिगुप्त' नाटक का एक उदाहरण

"छिपा ही रहता हृदय में सतत अपना मोह।
दूर उठ उँचे गगन में,
खोल पर विस्तृत पवन में,
भूल सकता नीड का भ्या, रे विलंग ! बिछोह ?
भूल निज सीमा हृदय रे !
कल्पना की कोरका केवल करूण यह छोहा !"[39]

'शेरशाह' नाटक का एक उदाहरण

"टूट गया है दिल का साज
अब बे जान है यह आवाज
ऑखों ने सब खोल दिये
दिल ने छिपाये थे जो राज
काश न उसने सीखे होते
दिल लेने के यह अन्दाज।"[40]

इस प्रकार सेठ जी ने नाटक में सहजता, प्रभावोत्पादकता लाने के लिए जगह-जगह पर इस शैली का प्रयोग किया है।

3.7.4 दिवास्वप्न शैली

इस शैली का प्रयोग पात्रों के अचेतन में स्थित भावनाओं एवं इच्छाओं की अभिव्यक्ति के लिए होता है। मानसिक विकृति ग्रस्त पात्रों के जागृत अवस्था में भी स्वप्नवत भ्रांति होती है जो उन्हे यथार्थ लगती है।

'हर्ष' नाटक में आया हुआ एक उदाहरण -

"प्रात:काल की प्रार्थना के अनन्तर शिबिका पर भगवान शिव, भगवान बुध्द और भगवान आदित्य की मूर्तियों का यज्ञशाला में आगमन होगा। शिविका - वाहक का कार्य, सम्राज्ञी, राज्यश्री, महाराजाधिराज हर्षवर्धन, कामरूपाधिपति कुमारराज भास्करवर्धन और वल्लभी नरेश सेनापति ध्रुवसेन करेंगे। शक्ति के सम्मुख चलनेवाले शिविका के सामने प्रतिहारी के रूप मे चलेंगे। चार माण्डलिक नरपति शिविका पर तने हुए वितान के स्तंभो को उठावेंगें और शेष माण्डलिक नरेशों में से एक शिविका पर तने हुए वितान के स्तंभो को उठावेंगे और शेष माण्डलिक नरेशों मेस एक शिविका पर छत्र लगावेगे, दो चामगद दो मारछल और दो व्यंजन डुलावेंगे। इसके पश्चात महाराजाधिराज साम्राज्य के समस्त कोष का दान करेंगे जो सब वर्णो के निर्धनों को बाँट दिया जायगा।"[41]

3.7.5 नाटकीय शैली -

जब कोई नाटककार कथोपकथनों में नाटकीयता भर देता है तो नाटक रोचक, सहज, स्वाभाविक, सरस बन जाता है। नाट्यशैली की सार्थकता छोटे-छोटे एवं सहज स्वाभाविक संवादों के माध्यम से ही संभव है। इस शैली के माध्यम से वस्तुओं को रूप और गति प्रदान करके उनमें तत्कालिकता का बोध कराता है।

'हर्ष' नाटक का एक उदाहरण -

"पहला : (खडे होते हुए) धन्य हमारा भाग्य।

दूसरा : (खडे होते हुए) अन्त में धर्म की जय निश्चित ही है!

तीसरा : (खडे होते हुए) इसमें कोई सन्देह नहीं है :

शशांक : हो ही नहीं सकता, हो ही नहीं सकता, आर्य।"[42]

इस प्रकार के कई उदाहरण इस नाटक में आये हैं।

'शशिगुप्त' नाटक में इस शैली का प्रयोग काफी मात्रा में किया है। इस नाटक में आया हुआ एक संवाद -

"हेलन : आपकी बडी कृपा।

आम्भीक : (हेलन की ओर एकटक देखते हुए) दुसरी भेट के पश्चात भी केवल धन्यवाद, कुमारी !

हेलन : (मोर की ओर देखते हुए, आम्भीक की मुद्रा और कथन पर बिना कोई ध्यान दिए) और कुछ चाहिए, राजन ?

आम्भीक : यदि आपकी कृपा हो तो चाहिए तो बहुत कुछ, कुमारी !

हेलन : (अब आम्भीक की ओर देखकर कुछ गंभीरता से) कहिए !

आम्भीक : (घुटने टेककर) मैं आपके प्रेम का भिक्षुक हूँ, कुमारी !"[43]

ऐसे नाटकों के संवादों के संवादों के माध्यम से नाटकीयता स्पष्ट रूप से हमारे सामने दिखायी देती है। इस शैली का प्रयोग नाटककार ने अपने विवेच्य नाटकों में जगह-जगह पर किया है।

3. 7 उद्देश -

साहित्य की कोई भी विधा क्यों न हो उस रचना का कोई-ना-कोई उद्देश होता ही है। साहित्य की रचना यशप्राप्ति, धनप्राप्ति, व्यवहार ज्ञान, अमंगलकारी तथ्यों का विनाश, तत्कालीन आनंद प्राप्ति, कान्तासम्मित उपदेश देने के लिए तथा स्वान्त: सुखाय के लिए की जाती है। नाटक का उद्देश अन्य साहित्य के समान मानव जीवन की यथार्थ और कलात्मक व्याख्या अथवा विवेचन करना है। कभी-कभी नाटककारों द्वारा किसी नायक के गुणों का उद्घाटन अथवा आदर्शो के प्रतिपादन के अनुरूप ही कथा को ढाला जाता है। हर्ष, शशिगुप्त, शेरशाह सेठ जी के इसी प्रकार के नाटक है। कभी-कभी नाटककार मानव जीवन की सत्वृत्तियों में द्वंद्व प्रदर्शित कर अंत में सत् का असत् पर विजय दिखाना ही अपनी रचना का उद्देश मानते है।

उपर्युक्त विवेचन से यह निर्विवाद सिद्ध है कि उद्देश्यों में विभिन्नता हो सकती है किन्तु उनका मेरूदण्ड मानव जीवन ही रहता है।

सेठ जी के विवेच्य नाटक ऐतिहासिक है। ऐतिहासिक नाटक का महान उद्देश अपने देश की महान विभूतियों से जनता को परिचित कराना होता है। इसके जरिए वह दृढ देशभक्ति की भावना को उत्तेजित करता है, स्वातंत्र्य के प्रति प्रेमभाव जागृत करता है तथा सभी मनुष्यों को एक सूत्र में पिरानेवाली सामाजिक जीवन की आधारभूत संस्थाओं के प्रति श्रध्दा को जागृत करता है।

मेकॉले ने ऐतिहासिक नाटक के प्रयोजनों को इस रीति से स्पष्ट किया है। वे लिखते है, ''अतीत को वर्तमान बनाना, दूरी को निकट लाना, महान व्यक्तित्व के सम्मुख हमें उपस्थित करना, अथवा हमें उस उँचाई पर पहुँचा देना जहाँ से हम किसी घनघोर युध्द का घमासान रणक्षेत्र देख सकते हैं, उन्हें रक्त मांस प्रदान कर सजीव यथार्थता से अनुप्राणित करना, हमारे सामने हमारे पूर्वजों को उनकी अपनी सभी भाषा विशेषताओं, चाल ढाल रहन-सहन एवं वेशभूषा के साथ खडा करना, उनके निवासस्थानों में भीतर बाहर हमें घुमा लेना, उनकी मेजों के पास हमें बैठाना, उनके पुराने ढंग के वस्त्राधारों की छानबीन करना, उनके वैभवशाली नक्षीदार फर्निचर की उपयोगिताओं की व्याख्या करना आदि। ये वास्तव में इतिहासवेत्ता के कर्तव्यों के अंग होते हैं। इन्हीं को ऐतिहासिक नाटककार अपनाता है।''

सेठ जी 'हर्ष' नाटक में इतिहास प्रसिध्द सम्राट हर्षवर्धन की घटनाओं से संबंधित रचना है। 'हर्ष' नाटक का प्रमुख उद्देश है आदर्श राज्य और शासन-प्रणाली, सार्वजनिक हित और देशी-विदेशी राजाओं से परस्पर मैत्री के सिध्दातों का प्रतिपादन करना। राजा को प्रजा-हित के लिए क्या करना उचित है, इस पर भी प्रकाश डाला गया है। साथ ही साथ यह भी बताया है कि युध्द और हिंसा त्यागकर शांतिमय साधनों से ही राज्य-संचालन की प्रेरणा मिलती है। इन सभी घटनाओं तथा तत्कालीन परिस्थितियों का प्रतिपादन करना ही इस नाटक का प्रमुख उद्देश है।

सेठ जी का दूसरा ऐतिहासिक नाटक 'शेरशाह' राष्ट्रीय चेतना प्रधान रचना है। इस नाटक की कथावस्तु मध्यकालीन भारतीय इतिहास से सम्बन्धित है। यह रचना उद्देश प्रधान है। इनमें राष्ट्रोध्दार का स्वर आद्यन्त प्रबल बना रहा है। इस नाटक का प्रमुख उद्देश ही राष्ट्रवाद की प्रतिष्ठा तथा राष्ट्रीय एकात्मता की स्थापना करना रहा है। हिन्दू और मुसलमान

सभी मिलकर विदेशी मुगलों का मुकाबला करते हैं, मुगलों को देश का शत्रू समझते हैं। जो साम्प्रदायिकता धर्म पर अवलंबित है, उसका विरोध कर उदार दृष्टिकोण अपना लिया गया है। एक ही भारत देश में बैठनेवाले हिन्दू और मुसलमान सब एक हैं। बाहर से आनेवाले मुसलमान मुगल भी इस दृष्टि से विदेशी हैं। भारत में रहनेवाले राष्ट्रवादी मुसलमान कदापि उनका स्वागत नहीं कर सकते। इस दृष्टि से यह नाटक बहुत उँचा उठ जाता है। एक स्था न पर शेरशाह कहता है, ''मैं चाहता हूँ इस मुल्क के हिन्दू मुसलमान दोनों मिलकर इस बाहरी कौम का मुकाबला करें..... यहाँ की आम रिआया को इसमें शामिल किया जाय.....।''[44]

आज जब देश का बँटवारा हो गया है तथा पाकिस्तान की स्थापना हो चुकी है, काश्मीर-समस्या का हल करना है, मुसलमानों के पथ-प्रदर्शन के लिए यह नाटक अपना विशेष महत्व रखता है, क्योंकि भारत में रहनेवाले मुसलमान भाई आज भी पाकिस्तान की ओर देखते हैं और जनता को यह गुप्त भय है कि यदि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का युध्द हो जाए , तो भारत में रहनेवाले मुसलमान, मुसलमान होने के कारण पाकिस्तान का ही साथ देंगे। शेरशाह का राष्ट्रवादी आदर्श हमारे सामने आकाशदीप की तरह चमक रहा है, जिसने मुसलमान होते हुए भी मुगलों को विदेशी माना और उनका डटकर मुकाबला किया। इस तरह यह रचना युग चेतना की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण रचना है।

सेठ जी का विवेच्य नाटक 'शशिगुप्त' इतिहास प्रसिध्द चन्द्रगुप्त की कथा है। इस नाटक का प्रमुख उद्देश यह है कि समग्र भारत को एकता के सूत्र में पिरोना, जन्मभूमि के परतंत्र भागों को स्वतंत्र करना, देश में एक साम्राज्य की स्थापना करना और उसे इतना शक्तिशाली बनाना है कि संसार का कोई भी देश उस पर आक्रमण न करें, उसके सामने मस्तक न उठाये, आँख उठाकर देखे तक नहीं। नाटक के अंत में शशिगुप्त अपने लक्ष्य में कामयाब हो जाता है। इस नाटक में भारत और यूनान के एकत्रिकरण के लिए हेलन और चन्द्रगुप्त का विवाह हो जाता है। इस विवाह के साथ विश्वशांति और मैत्री की भावना दिखायी देती है। निष्कर्षत : हम कह सकते हैं कि 'शशिगुप्त' नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी आधुनिक व्यवहारपयोगी नाटक है।

निष्कर्षत : हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह के नाटकों में राष्ट्रीय एकात्मता की भावना, स्वाधीनता का प्रसार, सर्वधर्मसमभाव और देशभक्ति दिखायी देती है।

3.8 शीर्षकों की सार्थकता -

नाटक भी साहित्य की विधाओं में एक महत्वपूर्ण विधा है। प्राय: व्यक्ति के नाम के समान किसी साहित्य कृति का नाम अर्थात 'शीर्षक' ही विशेष अर्थ का बोधक होता है। नाटक के किसी-न-किसी तत्व या अंग की दृष्टि से उसका नाम अर्थात शीर्षक बहुत अर्थपूर्ण होता है। किसी भी कृति का शीर्षक हो, उसमें दो बातें होनी आवश्यक है - एक आकर्षक तथा दूसरा कथ्य के साथ गहरा संबंध। दूसरा गुण अत्याधिक महत्वपूर्ण है।

शीर्षक नाटक का महत्वपूर्ण तत्व है। उसका आकर्षक होना आवश्यक है। यदि वह पाठक के मन में जिज्ञासा एवं कौतूहल की सृष्टि न कर सका तो नाटक अनपढा ही रह सकता है। शीर्षक कथावस्तु, कथ्य अथवा पात्रों के संबंधित होना आवश्यक है। यदि वह नाटक की मूल संवेदना को ध्वनित या व्यंजित कर सके तो वह सार्थक शीर्षक होगा। नाटक पढकर समाप्त करते ही हमें शीर्षक की सार्थकता का बोध हो जाता है और हम लेखक के निर्णय के औचित्य को सराहने के लिए बाध्य हो जाते है। शीर्षक साहित्य कृति का एक ऐसा नाम होता है, जो साहित्य कृति का सबसे पहला, अत्यन्त अर्थपूर्ण और प्रेरक अंग होता है और जिसके आधार पर साहित्य कृति को अलग रूप से पहचाना जाता है।

सेठ जी के विवेच्य नाटकों की सार्थकता पर विचार करते हुए हमें सेठ जी के दृष्टिकोण पर विचार करना होगा। सेठ जी ने विवेच्य नाटकों के शीर्षक नायक के नाम पर रखे है। सेठ गोविन्ददास जी का इतिहास विशेष क्षेत्र है। भारतीय इतिहास के आरम्भ से लेकर गांधी जी का पूरा इतिहास, नाना बदलती हुई परिस्थितियाँ और भारत मे होनेवाले परिवर्तन, विदेशी आक्रमण तथा उनका प्रभाव, हिन्दुओं, पठानों, मुगलों, मराठों का जीवन और हिन्दी साहित्य तक अनेक ऐतिहासिक नाटकों में सर्वांग रूप में चित्रित है । विशेषता यह है कि तथ्यों की तोड मरोड न होते हुए भी उन्होंने भारतीय इतिहास को सरस नाटकीय रूप दे दिया है। भारत के प्राचीन काल से लेकर अर्वाचीन काल तक सम्पूर्ण भारतीय समाज का दर्शन उनके विवेच्य नाटकों द्वारा कर सकते है। यह नाटक साहित्य को उनकी विशेष देन है।

भारतीय इतिहास के विविध पहलुओं का इतना गहन अध्ययन किसी अन्य आधुनिक हिन्दी नाटककार ने नहीं किया है। इन नाटकों में प्राचीन वेश-भूषा, वास्तुकला, आचार-व्यवहार, शिष्टाचार, राजनीतिक परिस्थितियों का सदा ध्यान रखा गया है। तथ्य पुराने होते हुए भी नवीनतम ऐतिहासिक खोजों की प्रामाणिकता, पर्याप्त मौलिकता और रोचकता है। हिन्दी नाटक संसार के लिये यह बिल्कुल नई सामग्री है। अनेक नाटकों में नई-नई सूझ हैं, जो हमें नई दिशाओं में विचारने को प्रेरित करती हैं। सेठ गोविन्ददास जी के सर्वश्रेष्ठ नाटक ऐतिहासिक हैं, जिनमें नाटककार ने ऐतिहासिक गहनता, प्रामाणिकता और तत्कालीन ऐतिहासिक परिस्थितियों तथा वातावरण का विशेष ध्यान रखा है। अपने ऐतिहासिक नाटकों के सम्बन्ध में एक तत्व उन्होंने प्रारंभ में ही स्पष्ट कर दिया है -

"मेरा मत है कि नाटक, उपन्यास या कहानी लेखकों को यह अधिकार नहीं है कि वह किसी भी पुरानी कथा को तोड-मरोडकर से एक नई कथा बना दें। हाँ, कथा का अर्थ वह अपने मतानुसार बदल सकता है।"

अपने ऐतिहासिक नाटकों में सेठ गोविन्ददास जी ने आधार के रूप में सर्वविदित प्राय: प्रचलित ऐतिहासिक घटनाओं को ही लिया है, किन्तु उनकी गठन अपने निजी रूप में की है। उनकी व्याख्या सर्वथा मौलिक है। ऐतिहासिक घटना को चित्रित करने का नवीन प्रयत्न है। उन्होंने सदा नये ढंग से ही सोचा है और अतीत कालीन घटनाओं को नये दृष्टिकोण से देखा है, पिष्टपेक्षण से सदा बचे हैं।

सेठ गोविन्ददास का 'हर्ष' नाटक भी ऐतिहासिक ही है। 'हर्ष' नाटक में सम्राट हर्ष के जीवन की सारी घटनाएँ ऐतिहासिक है। हर्ष का एक आदर्श राजा, शांततापिय, विवेकशील, निस्वार्थी और उदार चरित्र, स्वाभिमानी, त्यागी वृत्ती के रूप में चित्रण हुआ है। इस नाटक में राजकुमार शिलादित्य के, मित्रों की प्रेरणा एवं कर्तव्य की पुकार से राज्यग्रहण करने, विध्यपर्वत प्रदेश के चित्तारोहण को तैयार राज्यश्री को लौटाने, राज्यश्री को सम्राज्ञी बनाकर स्वयं बहन के रक्षक रूप में कार्य करने, आर्यवर्त को एक साम्राज्य में परिणित करने, आर्य और बौध्द धर्म के एकीकरण के लिए शिव, आदित्य एवं बुध्द के संयुक्त पूजन का श्रीगणेश करने तथा सर्वस्व सम्पत्ति दान देने आदि की घटनाएँ वर्णित है। लेकिन इन सारी घटनाओं में हर्ष का व्यक्तित्व जुडा हुआ है। वह एक प्रमुख पात्र के रूप में हमारे सामने आता है इसी

कारण सेठ जी ने इस नाटक को दिया हुआ शीर्षक सार्थक लगता है। यह शीर्षक नाटक के नायक के नाम पर आधारित है।

'शशिगुप्त' नाटक भी सेठ जी का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक नाटक है। इस नाटक का प्रमुख पात्र शशिगुप्त ही है। इस नाटक शशिगुप्त एक वीर योद्धा, आज्ञाकारी शिष्य और निस्वार्थी देशसेवक है। प्रमुख रूप से 'शशिगुप्त' इस नाटक में यूनान सम्राट सिकन्दर के भारत पर आक्रमण अश्वकों के सरदार शशिगुप्त द्वारा उसका प्रतिरोध, आम्भीक का देशद्रोह, चाणक्य के निर्देश पर कूटनीति के रूप में शशिगुप्त द्वारा अलक्षेन्द्र के क्षत्रप बनने, पंचनद नरेश पर्वतक पर सिकन्दर के आक्रमण, पराजय और मैत्री, पर्वतक के सहयोग से सिकन्दर द्वारा मगध पर आक्रमण की योजना बनाने, चाणक्य की कूटनीति और प्रयत्नो से इस योजना के विफल होने और मगध पर आक्रमण किये बिना ही सिकन्दर के सिंध और मकरान के मार्ग से लौट जाने, शशिगुप्त द्वारा विद्रोह कर यूनानी सैनिकों के खदेडने, मार्ग में ही सिकन्दर के मरने, नन्द की विलासिता, चाणक्य की दूरदर्शिता और कूटनीति से नन्द और पर्वतेश्वर की मूत्यू, शशिगुप्त के भारत सम्राट बनने और चन्द्रगुप्त नाम धारण करने, भारत पर सिल्यूकस के आक्रमण, चन्द्रगुप्त से पराजय और हेलन से चन्द्रगुप्त के विवाह का चित्रण है। इस नाटक की सभी घटनाएँ शशिगुप्त से सम्बन्धित हैं। इस नाटक में शशिगुप्त का वर्णन एक आदर्श राजा के रूप में हुआ है।

सेठ जी का तीसरा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक नाटक 'शेरशाह' है। 'शेरशाह' मुस्लिम युग से सम्बन्धित गोविन्ददास का प्रथम नाटक है। इस नाटक की मुख्य कहानी शेरशाह तथा उसके कार्यों से सम्बन्धित है। उसमें आयी अवांतर घटनाएँ मुख्य कथा के साथ सुसम्बध्द है। इस नाटक में प्रमुख रूप से शेरशाह की वीरता और असाधारण चरित्र दिखायी देता है। शेरशाह नाटक में प्रमुख रूप से ऐतिहासिक घटनाओं की उथल-पुथल, युध्द और इतिहास का संमिश्रण दिखायी देता है।

इस प्रकार सेठ जी के इन तीनों विवेच्य ऐतिहासिक नाटकों का प्रमुख उद्देश राष्ट्रवाद की स्थापना करना, धर्मनिरपेक्ष और सम्मिलित राज्य स्थापित करने की प्रखर योजना बनाना है। साथही इन विवेच्य नाटकों का नामकरण करते समय नायक के नाम के आधार पर ही इन नाटकों का नामकरण किया है। जो सर्वथा सार्थक हैं क्योंकि इन नाटकों के

नायकों के साथ ही नाटक की कथावस्तु उनके इर्दगिर्द घूमती है

3.9 निष्कर्ष -

निष्कर्षत: सेठ गोविन्ददास जी के विवेच्य नाटकों के तत्वों के आधार पर हम कह सकते है कि विवेच्य नाटकों की कथावस्तु श्रृंखलाबद्ध है। विवेच्य नाटकों के सभी पात्र ऐतिहासिक है। इन विवेच्य नाटकों में से प्रमुख पात्रों के जरिए से सेठ जी आदर्श प्रस्थापित करना चाहते है। समग्रत: विवेच्य नाटकों के पात्रों के चरित्रचित्रण के निकष पर खरें उतरते है। प्रस्तुत नाटक के सभी पात्र ऐतिहासिक नाट्य स्थितियाँ तैयार करने में आवश्यक और महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नाटको के संवादों में स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, सरलता, रोचकता, प्रसंगानुकूलता, मार्मिकता, मनोवैज्ञानिकता, चरित्र प्रकाशन की क्षमता आदि गुण विद्यमान हैं। नाटक के संवादों के द्वारा पात्रों का चरित्रचित्रण अत्यंत सजीव रूप में हुआ है। संवाद प्रसंगानुकूल होने के कारण उनमें कथावस्तु का विकास करने की क्षमता है। उनमें कई संवाद भविष्य में घटनेवाली अलक्ष्य घटनाओं के संकेत देने की क्षमता रखते हैं। संवादो द्वारा नाटक में जो समस्याएँ उठाई गई हैं उनकी अभिव्यक्ति होती है और नाटकीयता के उद्देश्य स्पष्ट होते हैं। संवादों से नाटक की ऐतिहासिकता स्पष्ट हुई है। विवेच्य नाटकों ने चित्रित देशकाल वातावरण कथानक के अनुकूल और उचित है। नाटक में आन्तरिक और बाह्य वातावरण यथातथ्य हुआ है। आन्तरिक वातावरण पात्रों की मानसिक स्थिति, हावभाव और अंतर्द्वद्व के द्वारा तो बाह्य वातावरण में सभी परिस्थितियाँ चित्रित की है। विवेच्य नाटकों में ऐतिहासिक वातावरण को भव्य, वास्तविक, स्वाभाविक, सुंदर और कलात्मक रूप में प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयत्न नाटककार ने किया है। विवेच्य नाटकों की भाषा में कथ्य की गहरायी तथा चरित्रों का विकास करने की क्षमता देखी जा सकती है। भाषा मे व्यंग्यात्मकता, नाट्यानुरूपता, विषयानुकूलता, संवेदनशीलता, प्रौढता, सरलता आदि सभी गुण विद्यमान है। इन रचना के पीछे नाटककार के अनेक उद्देश्य हैं जिनमें प्रमुख है - राष्ट्रीय एकात्मता की स्थापना, धर्मनिरपेक्षता तथा देश में एकता की स्थापना करने का सफल प्रयास नाटककार ने किया है। साथ ही नाटककार ऐतिहासिकता का सहारा लेकर अपनी कल्पना के द्वारा सेठ जी ने विवेच्य नाटकों के शीर्षक तय किये है। उनमें पूर्ण रूप से उन्हें सफलता मिली है।

संदर्भ – सूची

1. डॉ. गोविंद त्रिगुणायत, शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दांत, पृ. 188
2. आ. भरतमुनि, अभिनव नाट्यशास्त्र, पृ. 116
3. डॉ. शान्ति मलिक, हिन्दी नाटकों की शिल्पविधि का विकास, पृ. 75
4. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, रंगमंच और नाटक, पृ. 70
5. डॉ. शान्ति मलिक, हिन्दी नाटकों की शिल्पविधि का विकास, पृ. 35
6. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 37
7. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 18
8. वही, पृ. 108
9. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 37
10. वही, पृ. 59
11. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 50
12. वही, पृ. 144
13. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 53
14. वही, पृ. 48
15. डॉ. प्रतापनारायण टंडन, हिन्दी उपन्यास कला, पृ. 89
16. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 5, 5, 6, 7, 7, 9, 9, 11, 14, 14, 16, 24, 24, 24, 25, 29, 31, 34, 48, 48, 48, 49, 52, 53, 52, 115, 118, 130, 130.
17. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 31, 32, 35, 36, 39, 41, 46, 50, 53, 53, 55, 55, 57, 58,62, 72,92, 92, 96, 100, 107, 109,112,115,116,120,123,128,134, 136, 139
18. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 4, 38, 152, 155, 159
19. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त पृ. 111
20. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 5, 6, 7, 9, 10, 11, 12, 14, 18, 19, 19, 40, 52, 56, 6 3, 6,5, 72, 91, 111, 129, 143, 149, 148, 143, 143, 147.

21. वही, पृ. 5, 32, 35, 37, 41, 45, 53, 57, 58, 67, 96, 96, 98, 103, 109, 113, 122, 127, 134.
22. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 56, 75
23. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 56, 132
24. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 31, 109, 165, 165, 169, 177.
25. वही, पृ. 105, 173
26. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 20, 20, 21, 21, 21.
27. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 44, 49, 71.
28. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 6, 20, 48.
29. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 4, 13, 53.
30. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त पृ. 28, 59, 89
31. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 10, 11, 111
32. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 66
33. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 90-91
34. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 56
35. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 20
36. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 37
37. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 53
38. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 60
39. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 149
40. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 148
41. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 122
42. वही, पृ. 25
43. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 56
44. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 50